ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

सितम्बर-२०१५

सितम्बर-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 4 ◆ उदयपुर

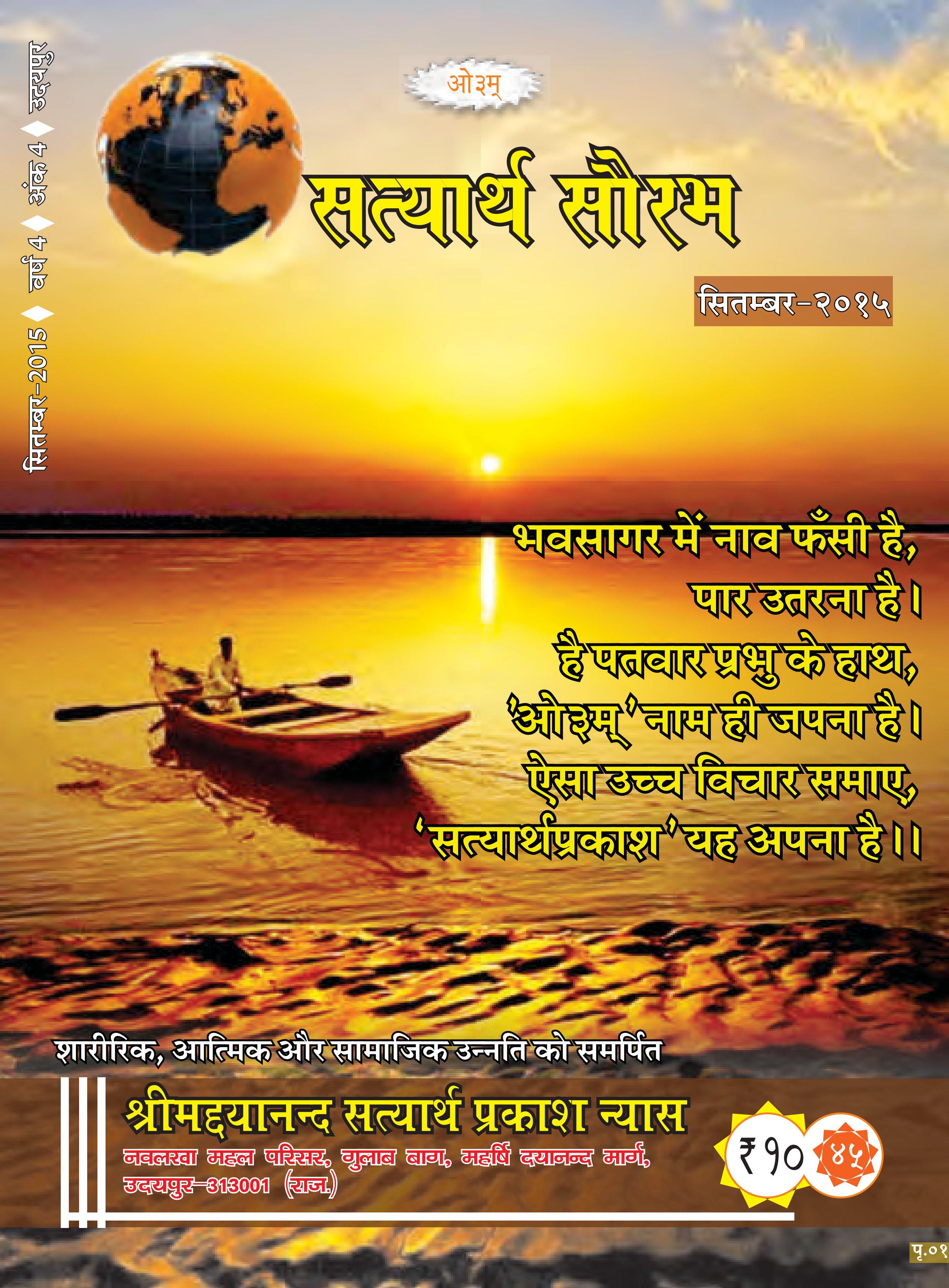

भवसागर में नाव फँसी है,
पार उतरना है।
है पतवार प्रभु के हाथ,
'ओ३म्' नाम ही जपना है।
ऐसा उच्च विचार समाए,
'सत्यार्थप्रकाश' यह अपना है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४५

श्रेष्ठ क्वॉलिटी, उत्तम स्वाद,
एम.डी.एच. मसालों में है कुछ बात।
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
MDH Chana masala
MDH Garam masala
MDH Peacock Kasoori Methi
MDH Chunky Chat masala
MDH DEGGI MIRCH
MDH Sambhar masala
MDH Dal Makhani masala
MDH Shahi Paneer masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Kitchen King
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास** के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
भाद्रपद कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

September- 2015

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

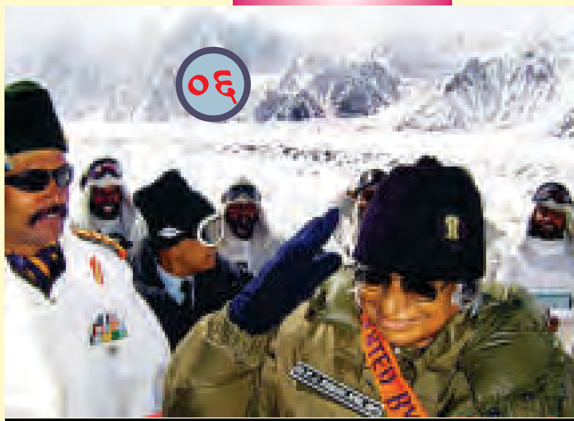

०६ कलाम को सलाम

२९ संन्यास के नाम पर

२६ १८वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

२७ हलचल

०४	वेद सुधा
०६	क्या ईश्वर है?
१२	कमाल का "कलाम"
१३	ऋषि दयानन्द और हिन्दी साहित्य
१५	मक्का भावना और हम
१७	योगीराज का जन्म दिवस
१८	प्रपीड़क पंचक
२१	परिवार का सहयोग
२३	हम तुम भांड हैं
२८	कथा सरित
३०	सत्यार्थप्रकाश पहेली-२०

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ४

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

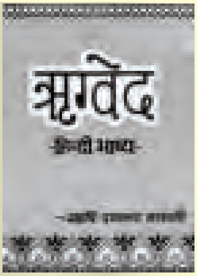

वेद सुधा

स्वास्थ्य

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२

गतांक से आगे ....

स्वास्थ्य के निर्माण के लिए तीसरा साधन संयम है। संयम शब्द में 'सम्' उपसर्ग है और यम शब्द 'यम उपरमे' धातु से बनता है, जिसका अर्थ प्रतिबंध करना, रोकना, अवरोध करना है। संयम शब्द का अर्थ हुआ भलीभाँति रोकना। किसको रोकना? वीर्य को। वीर्य शरीर का मूल्यवान अंश है। मनुष्य इस तत्व की जितनी रक्षा करता है जीवन में उतना ही स्वस्थ और नीरोग बनता है, इन्द्रियाँ सुदृढ़ और शक्तिशाली बनती हैं। साहस, उत्साह, ओज और तेज की वृद्धि होती है। प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता मनुष्य का साथ नहीं छोड़तीं। मनुष्य में धैर्य बढ़ता है। वह प्रत्येक विपत्ति का सामना करने के लिए तैयार रहता है। स्मरणशक्ति तीव्र और स्थिर रहती है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए तो संयम मानो सोने पर सुहागे का काम करता है। आत्मा में पवित्रता का समावेश जितना ब्रह्मचर्य से होता है उतना अन्य किसी साधना से नहीं हो पाता। ऋषियों ने इसे ईश्वर प्राप्ति का एक साधन स्वीकार किया है। यह संयम प्राप्त होता है पवित्र विचारों से और सात्विक आहार से। मनुष्य को चाहिए कि इसकी प्राप्ति के लिए दुष्ट विचारों और तामसिक आहार को अपने निकट न फटकने दे।

सुन्दर स्वास्थ्य का चौथा साधन है नियमित दिनचर्या। नियमित दिनचर्या से मनुष्य के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। जो व्यक्ति निश्चित समय पर सोता है, निश्चित समय पर जागता है, निश्चित समय पर खाता पीता है, निश्चित समय पर विहार करता है, वह निश्चित रूप से दीर्घजीवी होता है। यह नियमित दिनचर्या जहाँ उसके जीवन को मर्यादित एवं सन्तुलित बनाती है, वहाँ उसके जीवन की सौन्दर्य वृद्धि में भी सहायक होती है। महापुरुष समय विभाग के अनुसार अपने समस्त कार्य करते हैं। जिस व्यक्ति के सोने-जागने, खाने-पीने, भ्रमण करने तथा अन्यान्य कार्य करने का कोई निश्चित समय नहीं होता वह व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। उसका स्वास्थ्य भी सुन्दर नहीं हो सकता। पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् थे। आर्यसमाज के अनन्य प्रेम और कार्याधिक्य के कारण वे इस नियमितता को स्थिर नहीं कर पाये। जागते तो कई-कई रातें जागते रहते और पढ़ते रहते। रात्रि के जागरण की कमी दिन में कई-कई घण्टे सोने से पूरी होती थी। परिणाम यह निकला कि २६ वर्ष की अल्पायु में ही वे संसार से चल बसे। जो व्यक्ति प्रकृति के नियमों को तोड़ता है, प्रकृति उसे कभी क्षमा नहीं करती। प्रकृति इस बात की ओर ध्यान नहीं देती कि नियम तोड़ने वाला विद्वान् है अथवा मूर्ख, धनवान है या निर्धन, सत्वगुणी है या तमोगुणी। प्रकृति के नियम सबके लिए बराबर हैं। जो उनका पालन करता है वह सुखी रहता है और जो उन नियमों को तोड़ता है वह कष्ट उठाता है। जीवन में दुःखों के नाश का एक बहुत बड़ा साधन यही है कि जीवन में मनुष्य नियमबद्ध होकर चले। इसकी पुष्टि में गीता में योगीराज श्रीकृष्ण महाराज ने कहा है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।। - गीता- ६।१७

अर्थात् दुःखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार और विहार करने वाले का, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाले का और यथायोग्य शयन करने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है। योग उसी व्यक्ति के लिए लाभकारी है जो नियमबद्ध है। अतः स्वास्थ्य के निर्माण के लिए अपनी निश्चित दिनचर्या के अनुरूप ही मनुष्य को चलना चाहिए।

स्वास्थ्य निर्माण का पांचवाँ साधन है प्रसन्नता एव निश्चिन्तता। प्रसन्नता एवं निश्चिन्तता मनुष्य के जीवन को जहाँ सुखी करती हैं वहाँ उसे स्वस्थ बनाती हैं। प्रसन्नता और निश्चिन्तता का सम्बन्ध मन से है। ये कोई ऐसी वस्तुएँ नहीं हैं जिन्हें

बाजार से खरीदा जा सके। यह सत्य है कि जीवन की बाह्य घटनाएँ भी अन्तर्मन पर बहुत प्रभाव रखती हैं। जब व्यक्ति के जीवन में सुखप्रद घटनाएँ घटती हैं तो मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य अपने मन में प्रसन्नता अनुभव करता है। इसके विपरीत जब मनुष्य के जीवन में दुःखप्रद घटनाएँ घटती हैं तो मनुष्य अपने मन में घोर विषाद एवं दुःख का अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में सामान्य मनुष्य की प्रायः यही अवस्था होती है कि सुखप्रद घटनाओं के घटने पर वह अप्रसन्न हो जाता है। प्रयत्न यह करना है कि जब मनुष्य पर दुःखप्रद घटनाएँ आएँ तब भी वह प्रसन्न रहे। गीता की भाषा में यही मानसिक तप भी है। हर समय प्रसन्न रहने का जो परिणाम निकलता है गीता में इसके विषय में कहा है-

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।। - गीता २।६५

स्थितप्रज्ञ के लक्षणों की चर्चा करते हुए योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज ने कहा है- समत्वयोग को धारण करने से मनुष्य को निर्मलता प्राप्त होती है। इस निर्मलता के प्राप्त होने पर उस व्यक्ति के दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्नचित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है। जो व्यक्ति हर समय प्रसन्न रहता है, दुःख उसके लिए दुःख नहीं रहता-

रंज से खूगर हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझपर पड़ीं इतनी कि आसां हो गईं।।

गृहस्थ को तो हर समय प्रसन्नचित्त अवश्य ही रहना चाहिए। प्रसन्नता कोई बाहर की वस्तु नहीं है। इसका सम्बन्ध मन के साथ है। जब मन को आप ज्ञान के द्वारा सन्तुलित कर लेंगे तो फिर विपत्तियों में भी आप मुस्करायेंगे। इस प्रसन्नता के साथ निश्चिन्तता का भी सम्बन्ध है। व्यक्ति यदि निश्चिन्त हो जाता है तो प्रसन्नता अपने आप उसे प्राप्त हो जाती है। चिन्ता मनुष्य को ऐसे खा जाती है जैसे आग घास-फूँस को भस्म कर देती है-

चिन्ता चिता समा ह्युक्ता बिन्दुमात्र विशेषिता।
सजीवं दहते चिन्ता निर्जीवं दहते चिता।।

चिन्ता को चिता के समान कहा गया है। इसमें विशेषता इतनी है कि चिन्ता में चिता की अपेक्षा एक बिन्दु की अधिकता है। चिता तो मरे हुए को जलाती है परन्तु चिन्ता जीवित व्यक्ति को जलाती है। यदि विपत्ति आ जाए तो उसकी चिन्ता न करो। चिन्ता मनुष्य को ऐसे खा जाती है जैसे घुन लकड़ी को खा जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि किसी भी विपत्ति के आने पर चिन्ता न करे, अपितु ठण्डे मन से उस पर चिन्तन करे और उसे दूर करने का उपाय सोचे। चिन्ता से तो शरीर का नाश होगा। इससे समस्या का समाधान नहीं होगा, अपितु रक्तचाप और हृदय रोग लगेंगे। समस्या तो और जटिल हो जाएगी। हाँ, चिन्तन करके उपाय ढूढ़ने से और प्रयत्न करने से तो समस्या का समाधान हो जायेगा, अतः गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति प्रसन्न और निश्चिन्त रहे।

इस मंत्र के 'विश्वमायुर्व्यश्नुतम' पद को हमने सबसे पहले लिया है। इस विश्वमायुः अर्थात् सौ वर्ष के जीवन का आधार, सुन्दर स्वास्थ्य की प्राप्ति के पाँच साधन हैं, जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। **क्रमशः ....**

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सद्भाव और सत्कर्म से ही,
होता है उत्कर्ष।
साकार होते हैं सपने सब और,
मिलता है हर क्षण हर्ष।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आर्य जगत् की एक अपूरणीय क्षति

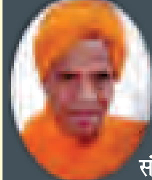

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी, चम्बा ने हम सबसे विदा ले ली। स्वामी जी काफी समय से व्याधियों से जूझते हुए भी कर्तव्य पालन में रत थे। उनके नेतृत्व में दयानन्द मठ, चम्बा ने अनेक लोकोपकारक प्रवृत्तियों का शुभारम्भ व निरन्तर संचालन किया। स्वामी जी हमारे प्रति अत्यन्त आत्मीय भाव रखते थे। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि सर्वोच्च सांगठनिक स्तर पर एकता स्थापित हो जाए। वे इसके लिए प्रयत्नशील भी रहे। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार, स्वामी जी के निधन पर शोक संवेदना प्रकाशित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- अशोक आर्य

आत्मनिवेदन

हौसलों की उड़ान

जब तेज बरसात होती है तो पशु-पक्षी सभी बड़े-बड़े वृक्षों के आश्रय में अपनी सुरक्षा हेतु दुबक जाते हैं । ऐसे में बाज किसी वृक्ष का आश्रय नहीं लेता वरन् बादलों का सीना चीरकर उनके पार चला जाता है , अपने अध्यापक के ये शब्द किशोर अब्दुल कलाम के आदर्श बन गए और रामेश्वरम जैसी छोटी जगह में,सामान्य आर्थिक स्थिति वाले परिवार में पैदा होने वाले इस बालक ने ऐसी होंसलों से भरी उड़ान भरी कि राष्ट्र के सर्वोपरि पद राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया तथा राष्ट्र के सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न को प्राप्त किया। यही नहीं विश्व के शक्ति संतुलन के दर्शन को समझते हुए राष्ट्र को परमाणु शक्ति से संपन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने पहले कार्यकाल में ही इस योजना को हरी झंडी देना चाहते थे पर न दे पाए। जब वे १६६८ में पुनः सत्तासीन हुए तो उन्होंने DRDO तथा DAE को हरी झंडी दे दी। उस समय DRDO के मुखिया श्री डॉ. अब्दुलकलाम तथा DAE के मुखिया डॉ. आर.चिदंबरम थे। कलाम रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार भी थे। अमेरिका सहित अन्य देशों ने पूरी खुफिया ताकत झोंक रखी थी कि अगर भारत परमाणु विस्फोट अथवा ऐसी कोई कोशिश करे तो उन्हें पता चल जाय, परन्तु पोकरण में सफल परीक्षण भी हो गए उन्हें हवा भी नहीं लगी। यह सी.आई.ए. की सबसे बड़ी हार थी।

डॉ. कलाम ने किस प्रकार इस असम्भव गोपनीय कार्य को अपने साथियों सहित सफलता तक पहुँचाया यह लम्बी दिलचस्प कहानी है जिसे इस आलेख में वर्णित नही किया जा सकता। ११ मई को भारत के मिसाइलमेन डॉ. कलाम ने ट्वीट किया -

"Today, I remember the hot day of 1998 at Pokhran: 53C. When most of the world was sleeping; India's nuclear era emerged."

कुछ लोग कलाम के इस प्रयास पर नाक मुँह चढ़ाते हैं। ऐसे लोग यथार्थवादी नहीं कल्पना लोक में जीने वाले हैं। डॉ. कलाम के निधन पर भी ऐसे तथाकथित बुद्धिवादी शान्त नहीं रहे। उनका प्रतिनिधित्व करते हुए प्रख्यात पत्रकार सागरिका घोष ने उन्हें 'ओल्ड बाम्ब डैडी' के नाम से सम्बोधित कर अपना कलुष प्रस्तुत कर दिया। परन्तु स्वयं कलाम साहब ने ऐसे एक प्रश्न का क्या उत्तर दिया वह देखें -

"Sir, we are happy about the new Brahmos (missile) you have invented. But why don't you invent things which promote peace?"

To which, Kalam posted the reply: "...strength respects strength." हम इससे पूर्ण सहमत हैं।

एक समय था जब भारत को अपने उपग्रह पृथ्वी की बाहरी कक्षा में स्थापित करने हेतु अन्य देशों को धन देकर उनके प्रक्षेपण यानों का प्रयोग करना पड़ता था। जब कलाम ISRO में परियोजना निदेशक थे तो प्रोफेसर सतीश धवन के नेतृत्व में घरेलू प्रक्षेपणयान के निर्माण कार्य को गति मिली और SLV III उपग्रह प्रक्षेपण यान का निर्माण तथा उसके माध्यम से रोहिणी उपग्रह के प्रक्षेपण का श्रेय डॉ. कलाम को ही जाता है।

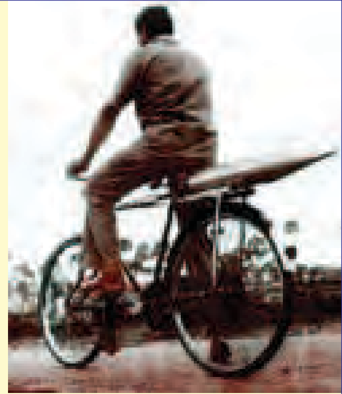

आज स्थिति यह है कि दूसरे देश धन देकर हमारे SLV का उपयोग करते हैं। आज तक हम १६ देशों के ४० उपग्रह लांच कर चुके हैं। आज जब स्वदेशी तकनीक से क्रायोजेनिक इंजन बनाए जा चुके हैं, हमें शुरुआती दिन भी याद रखने चाहिए जब रॉकेट का कोन साइकल पर और एपल उपग्रह बैलगाड़ी में ढोकर इसरो लाए जाते थे। डॉ. कलाम का सपना था कि ऐसे लांच यान बनाए जाएँ जो उपग्रह को स्थापित कर वापस आ जायँ और फिर ईंधन भरकर पुनः काम में लाए जायँ अर्थात् आर.एस.एल.वी.। भारत इस दिशा में तेजी से बढ़ रहा है और हमारे वैज्ञानिकों की कलाम साहब को यह सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि होगी।

रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में शोध पर ध्यान केन्द्रित करने वाले डॉ. कलाम बाद में भारत के मिसाइल कार्यक्रम से जुड़ गए। बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण वाहन तकनीक में उनके योगदान ने उन्हें 'भारत के मिसाइल मैन' का दर्जा प्रदान कर दिया। पृथ्वी, त्रिशूल, अग्नि उनकी देन हैं।

डॉ. अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व को केवल एक सफल वैज्ञानिक के रूप में ही समेटा जाय तो यह संभव नहीं और उचित भी नहीं। राशन के केरोसिन से जलने वाले दीपक की रोशनी में बचपन में पढ़ायी करने वाले, अल-सुबह घर-घर जाकर समाचार पत्र बेच अपने भाइयों की मदद करने वाले, बचपन से ही ऊँची और ऊँची उड़ान के सपने देखने वाले अब्दुल में और बहुत कुछ के साथ-साथ जो चीज सबसे ज्यादा थी वह था हौंसला, सहृदयता तथा चारित्रिक दृढ़ता। जिसके कारण न केवल वह सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए बल्कि मजहबी सीमाओं को लाँघ जन-जन के दिल में भी प्रतिष्ठित हुए। २७ जुलाई २०१५ को उनके निधन के समाचार से कौनसी ऐसी निष्ठुर आँख थी जो नम नहीं हुई, वस्तुतः तो अपने लाडले सपूत को सदा-सदा के लिए खोकर भारत माता भी रोए बिना न रह सकी।

डॉ. कलाम प्रारब्ध और पुरुषार्थ के समन्वित रूप थे। वे स्वयं एक फाइटर पायलट बनना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने जो परीक्षा दी उसमे नवें नंबर पर आये जबकि उन्हें सिर्फ आठ व्यक्ति चाहिए थे। उनके प्रारब्ध में तो भारत को एक शक्तिशाली स्वावलंबी राष्ट्र के रूप में विकसित करना था अतः वे फाइटर पायलट नही बन सके, यद्यपि ७८ वर्ष की उम्र में उन्होंने राष्ट्रपति रहते हुए फाइटर प्लेन सुखोई-३० की उड़ान में सह-चालक बन एक रिकार्ड कायम किया।

दिन रात वैज्ञानिक विकास की चिंता करने वाले कलाम अत्यन्त सहृदय थे। एक बार जब ७० वैज्ञानिकों की टीम एक प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी तो वैज्ञानिकों को काम करते करते ७-८ भी बज जाते थे। एक बार एक वैज्ञानिक ने उनसे शाम ५ बजे घर जाने की अनुमति माँगी क्योंकि उसने अपने बेटे से नुमाइश दिखाने का वायदा किया था। डॉ. कलाम ने उन्हें अनुमति दे दी। परन्तु वह वैज्ञानिक अपने काम में ऐसा खोया कि उसे समय का ज्ञान ही नहीं रहा। जब देखा तो रात के ८ बज रहे थे। वह इस बात पर शर्मिन्दा होते हुए अपने घर पहुँचा कि वह अपने बेटे से किया वायदा पूरा नहीं कर सका। घर पहुँचा तो देखा- बेटा घर नहीं है। पत्नी से पूछा तो ज्ञात हुआ कि सेन्टर से कोई आया था जो बच्चे को नुमाइश दिखाने ले गया है। पता चला वह और कोई नहीं बल्कि स्वयं अब्दुल कलाम थे जिन्होंने जब शाम ५ बजे उस वैज्ञानिक को काम में डूबा देखा तो उसके वायदे को निभाने वे स्वयं उसके बेटे को लेकर मेले में चले गए। मरते दम तक कलाम की इस सहृदयता ने उनका साथ नहीं छोड़ा।

२७ जुलाई को प्रातः जब वे शिलांग IIT में भाषण देने जा रहे थे तो एक एस्कार्ट उनके साथ चल रहा था जिसमें एक ऑफीसर सारे रास्ते खड़ा रहा। कलाम उसके खड़े रहने से बड़े व्यथित थे, वह थक जायगा, खड़े रहने की क्या आवश्यकता है आदि-आदि। उन्होंने अपनी कार में बैठे साथियों के माध्यम से कई बार रेडिओ सिग्नल देने का असफल प्रयास किया। अंत में गंतव्य पर पहुँच उस आफीसर को बुला उसे कहा कि उसे बैठ जाना चाहिए था और फिर उससे हाथ मिलाकर धन्यवाद

कहा। एक अनजान छोटे से अफसर के लिए सहृदयता की इस भावना के प्रदर्शन के चंद समय बाद ही यह महानात्मा हमसे विदा ले गया।

डॉ. कलाम के व्यक्तित्व का एक पहलू यह भी था कि वे संगीत प्रेमी भी थे। यद्यपि इस बारे में अधिक लोग नहीं जानते, परन्तु फुरसत के क्षणों में वे रुद्रवीणा का रियाज करते थे। डॉ. कलाम जहाँ भी रहे ईमानदारी और चारित्रिक दृढ़ता की मिसाल रहे। राष्ट्रपति भवन में दो सूटकेस लेकर आये और दो ही सूटकेस लेकर गए। एक बार उनके कुटुम्ब के बहुत से मेहमान राष्ट्रपति भवन में आये तथा अजमेर दरगाह पर भी गए। कलाम साहब ने इनका पूरा व्यय जो तीन लाख से अधिक था चुकाया। एक बार मिक्सी ग्राइंडर बनाने वाली कम्पनी ने उन्हें ग्राइंडर उपहार में दिया पर उन्होंने विनम्रता से उपहार के रूप में इसे अस्वीकार करते हुए इसकी राशि पूछते हुए चेक से प्रेषित करने का प्रस्ताव किया क्योंकि वह ग्राइंडर उन्हें चाहिए था। जब कम्पनी ने इन्कार किया तो उन्होंने कहा कि ऐसी हालत में वह ग्राइंडर लौटा देंगे। आखिरकार उन्होंने उस ग्राइंडर का भुगतान किया।

ऐसी चारित्रिक दृढ़ता उनके अन्दर कहाँ से आयी- अपने पिता द्वारा दिए संस्कारों से। वे अक्सर अपने भाषणों में सुनाया करते थे- 'मैं जब छोटा था तब मेरे पिता को रामेश्वरम की पंचायत का प्रधान बनाया गया था। पिता एक स्थानीय मस्जिद में मौलवी थे। एक दिन मैं जोर-जोर से बोलते हुए अपना पाठ बहुत दत्तचित्त होकर याद कर रहा था। तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। उन दिनों रामेश्वरम में दरवाजे बन्द रखने का रिवाज नहीं था पर शायद कोई अजनबी था इसलिए खटखटाया था। मैं अपनी पढ़ाई में डूबा हुआ था। मैंने माँ को आवाज लगायी पर वे नमाज पढ़ रहीं थीं। अतः उन्होंने जबाब नहीं दिया। आखिर मैंने ही उन्हें अन्दर आने को कहा। कोई अजनबी थे, उनके हाथ में एक पैकेट था। उन्होंने पिताजी के बारे में पूछा, मैंने कहा वे बाहर गए हैं तो उन्होंने वह पैकेट दिखाकर कहा कि वे पिताजी के लिए लाये हैं। माता-पिता दोनों नहीं थे, मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त होना चाहता था। बिना ज्यादा सोच-विचार के मैंने उन्हें खाट पर रखने को बोल दिया। वे चले गए और मैं अपनी पढ़ाई में सब कुछ भूल गया। जब पिताजी आये तो खाट पर पैकेट देख पूछा- कि यह क्या है तो मैंने उत्तर दिया कि कोई व्यक्ति उनके लिए रख गया है। पिताजी ने जब देखा उसमें अंगवस्त्रम् आदि थे तो मेरी बहुत पिटायी की। बाद में पिताजी मुझसे बोले कि कभी किसी से उपहार स्वीकार मत करो। जब आप किसी प्रतिष्ठा के पद पर होंगे तो वह उपहार देने वाला आपसे कुछ 'फेवर' अवश्य चाहेगा और वैसा करना बेईमानी होगी।'

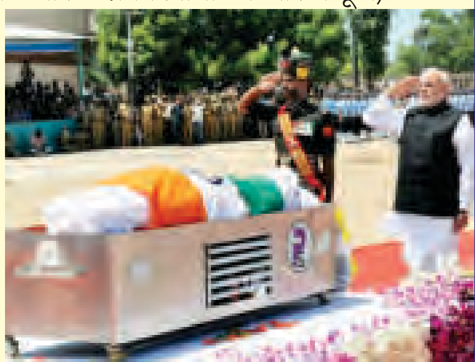

आज जब देश अपने दिल पर राज करने वाले महान् व्यक्ति को विदा कर रहा है, आएँ उनकी महानता और उनके आदर्शों को अपने पास सहेजकर रख लें, ताकि २०२० तक जिस उन्नत राष्ट्र का स्वप्न डॉ. कलाम देख रहे थे जब उसका निर्माण हो तो उसका प्रत्येक नागरिक कलाम साहब जैसा हो।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

क्या ईश्वर है? ईश्वर है तो कहाँ रहता है? और क्या करता है?

'ईश्वर है' यह विचारधारा आस्तिकता की पृष्ठभूमि है। 'ईश्वर नहीं है' ऐसा कहने वालों को नास्तिक कहा जाता है। पश्चिम के जिन विद्वानों ने ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया उनकी दृष्टि में बाइबिल के ईश्वर का स्वरूप था। यदि उन्होंने वेद-वर्णित ईश्वर की व्याख्या जानी होती तो वे सब ईश्वर विश्वासी होते।

नास्तिकों की कोटि में वैज्ञानिकों को भी शामिल किया जाता है। 'धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी विचारधारा है' ऐसी भी मान्यता है जैसे एल्बर्ट मेकोम्स विन्चेस्टर के शब्दों में- 'जब मैंने कॉलेज में प्रवेश के समय विज्ञान विषय चुना तो मेरी चाची ने मुझे अलग ले जाकर अपना इरादा बदल देने को कहा क्योंकि उसे डर था कि विज्ञान से मेरा ईश्वर के प्रति विश्वास शिथिल पड़ जायेगा क्योंकि अन्य लोगों की तरह वह भी समझती थीं कि विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी हैं। मुझे प्रसन्नता एवं गर्व है कि वैज्ञानिक बनने के बाद भी, परमात्मा के प्रति मेरा विश्वास विचलित नहीं हुआ बल्कि ईश्वर की कारीगरी को देखकर मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया।'

हमारे लिए यह सुखद आश्चर्य है कि वैज्ञानिक भी विशेषकर विदेशी (पश्चिमी) ईश्वरीय सत्ता पर अटूट विश्वास रखते हैं।

कुछ दिन पूर्व मुझे 'ईश्वर' नाम की पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला जिसमें चालीस पश्चिमी वैज्ञानिकों के ईश्वर के प्रति आस्था के विचार वर्णित थे। सभी इस विषय में एक मत थे कि

ईश्वर है जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सर्वोपरि सत्ता है। इन वैज्ञानिकों में भौतिकविद्, रसायनविद्, प्राणिविद्, भूगर्भविद्, कृषि-वृक्ष-वनस्पतिविद्, कीट और जन्तुविद् तथा ज्योतिषविद् शामिल थे। उन सबका एक मत था कि उन्होंने विज्ञान की जिस-जिस शाखा का अध्ययन किया उस-उस में उन्हें सर्वत्र-क्रम, व्यवस्था, सुघड़ता तथा नियमबद्धता इतनी अधिक दिखाई दी कि वह मान ही नहीं सकते कि यह संसार बिना किसी नियामक, कर्त्ता तथा व्यवस्थापक के स्वयमेव तथा अकस्मात् पैदा हो गया प्रत्युत् इसकी रचना ऐसे 'पुरुष' की इच्छा और योजना के अनुसार हुई है, जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी, जिसमें योजना के अनुसार रचने तथा जारी रखने का सामर्थ्य था (सर्वशक्तिमान), जो इसे सम्पूर्ण विश्व में लागू कर सकता था (सर्वव्यापक)। स्पष्ट है कि ईश्वर है। सृष्टि की रचना सर्वोच्च-आत्मतत्व परमात्मा के बिना कोई नहीं कर सकता। ईश्वर केवल है ही नहीं परन्तु वह महान् है। जिसे शीश झुकाकर हम सब नमस्कार करते हैं।

कुछ महान् वैज्ञानिकों के मुख से-

'ओ मेरे ईश्वर! जब मैं आश्चर्य से चकित तेरे हाथों से निर्मित सब लोकों को सोचता हूँ, देखता हूँ सितारों को और सुनता हूँ बिजली की कड़क, अनुभव करता हूँ विश्व में तेरी प्रदर्शित शक्ति को, तब गाती है मेरी आत्मा, मेरे रक्षक प्रभु तेरे लिए, तू कितना महान् है तू कितना महान् है।'

(डोनाल्ड रोबर्ट कार, भू विज्ञान)

उगल रही प्रकृति गीतों को। स्रष्टा की स्तुति में हो विभोर।।

(लारेन्स कोल्टन वौकर, वनान्वेषी)

कैसे मनुष्य का दिमाग तरह-तरह की जटिल चीजें बना देता है। वही बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि जटिल जीवधारियों की रचना भी किसी परमबुद्धि का चमत्कार है।

मेरा विश्वास है कि परमात्मा है। जो परिश्रमपूर्वक उसे खोजते हैं वह उन्हें पुरस्कृत करता है। (मर्लिन ग्रान्ट स्मिथ, विद्वानों की साक्षियाँ)

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि परमात्मा हमारा निर्माता, त्राता, मुक्तिदाता, प्रेमकर्त्ता और मित्र है।

(एडमण्ड कार्ल कौर्न फील्ड -ईश्वर ही आदि और अन्त)

अतः उपरोक्त विचारों से सिद्ध हो गया कि ईश्वर है और उसकी सत्ता को भी सभी स्वीकार करते हैं।

आधुनिक युग के महान् मनीषी दार्शनिक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में जो विचार प्रस्तुत किए हैं उनके द्वारा ईश्वर के स्वरूप को समझा जा सकता है, ऐसा मेरा मत है। यह भी विश्वास है कि महर्षि दयानन्द ने ईश्वर का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उसे जानकर नास्तिकता स्वयं मिट जायेगी।

इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। - सत्यार्थप्रकाश समु.-७

ईश्वर की सत्ता पर तो लगभग सभी सम्प्रदाय विश्वास करते हैं किन्तु वह कैसा है, कहाँ रहता है, क्या करता है, क्या कर सकता है, क्या नहीं कर सकता? इन सब प्रश्नों पर मत भिन्नता है। इसी अनेकता ने ही विभिन्न सम्प्रदायों को जन्म दिया है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमों की रचना करते हुए जो प्रथम दो नियम लिखे हैं वह इतने तर्कशुद्ध, अव्याप्ति और अतिव्यापित दोष से रहित और पूर्ण हैं कि शायद इसके बाद ईश्वर के विषय में कुछ और कहने को बचता ही नहीं।

पहला नियम- 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'

दूसरा नियम- 'ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

अतः ईश्वर एक है (वेदों में वर्णित है) परन्तु उसके गुणकर्म स्वभाव के कारण उसके नाम अनेक हैं। जैसे व्यक्ति एक होता है परन्तु उसके रिश्तों के नाम कई होते हैं।

ईश्वर निराकार है उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है। उसकी कोई मूर्ति भी नहीं बन सकती। ईश्वर सूक्ष्म से सूक्ष्म है तथा सर्वव्यापक है। वह इतना सूक्ष्म है कि आत्मा जैसी अतिसूक्ष्म सत्ता में भी विद्यमान है। सभी जगह व्यापक होने के कारण उसे महान् भी कहा जाता है।

ईश्वर अजन्मा, अनन्त और अनादि है। वह न कभी जन्म लेता है और ना ही कभी मरता है। वह ज्ञानवान तथा न्यायकारी है। संसार में फैले सम्पूर्ण सद्ज्ञान का स्रोत है। वह पूर्ण ज्ञानी है। वेदों के रूप में उसने सारा ज्ञान प्राणीमात्र के कल्याण के लिए दिया है। ईश्वर अनुपम है। उसके समान दूसरा कोई नहीं है।

यह तो सिद्ध हो गया कि ईश्वर है परन्तु सबसे जटिल प्रश्न तो यह है कि वह कहाँ रहता है। इस बारे में जितने सम्प्रदाय हैं

उतने ही भिन्न-भिन्न मत हैं।

सभी सम्प्रदायों ने अपने-अपने मतानुसार उसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च, सातवें तथा चौथे आसमान पर बैठा दिया है। ईसामसीह तो ईश्वर का इकलौता पुत्र था। भक्तों ने अपने-अपने भगवानों की प्रतिमाओं की मंदिरों में स्थापना कर उसे कमरों में बंद कर दिया। इन मूर्तियों में प्राणप्रतिष्ठा कर उन्हें जीवित शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया और वह भक्तों के लिए वरों के दाता बन गए। इतना ही नहीं उन मूर्तियों का मानवीकरण कर दिया। साधारण मानव की तरह उन्हें भी भूख प्यास, दुःख-सुख आदि सताने लगे।

ऐसे भक्त कितने नादान हैं। जब मूर्ति पुजारी के रखरखाव में है तो तुम्हारे दुःख पीड़ा को कैसे हरेगी। तुम लाख श्रद्धा से उसके सामने गिड़गिड़ाओ, चाहे सोना-चाँदी चढ़ाओ परन्तु वह तुम्हारी ओर मुड़कर भी नहीं देखेगी क्योंकि वो जड़ है।

आज प्रतिमा को खुश करने के लिए मानव बलि दी जाती है जो ईश्वरीय भावना के विरुद्ध है।

आज कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो स्वयं को ईश्वर मानते हैं। ऐसे भगवानों के लाखों शिष्य अनुयायी हैं जिनका श्रद्धा के नाम पर भरपूर शोषण किया जाता है। ईश्वर के नाम पर होने वाला यह अत्याचार पाप है, अपराध है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आह्वान किया था कि वेदों की ओर लौट चलो। वेद ईश्वरीय वाणी है। इनमें अणु से लेकर ईश्वर तक के सत्यज्ञान का वर्णन है। ईश्वर संसार के अणु-अणु तथा अतिसूक्ष्म आत्मा में भी विद्यमान है परन्तु हर वस्तु में दिखाई नहीं देता।

ईश्वर कण-कण में है परन्तु हर कण ईश्वर नहीं। जैसे आग में लोहे का गोला आगस्वरूप तो हो जाता है परन्तु आग नहीं।

ईश्वर कहाँ रहता है इसका बहुत सुन्दर तथा सही उत्तर दिया है, महात्मा आनन्द स्वामी ने-

तेरा प्रभु तुझमें बसे। जाग सके तो जाग।।

ईश्वर के दर्शनमात्र तो मानव शरीर में ही होते हैं। ईश्वर को देखने वाले नेत्र तो इस मनरूपी मंदिर में खुलते हैं। यह शरीर जो ब्रह्मपुरी है इसमें एक छोटा सा हृदय कमल मंदिर है। इस

मंदिर के पीछे एक छोटा सा आकाश है। इस आकाश के भीतर जो कुछ है उसका अन्वेषण करना चाहिए। यही कमल का मंदिर भक्त और भगवान के मिलने का स्थान है। इस मानव शरीर के अंदर ही उसकी खोज करनी चाहिए। इसी स्थान का नाम गुहा है जिसके सम्बन्ध में यजुर्वेद कहता है **'वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा'।** यही बात अथर्ववेद के दूसरे काण्ड के पहले ही मंत्र में कही गई है। वेद भगवान तथा उपनिषद् ने जब मानव शरीर को भगवान का मंदिर बताया है तो किसी आस्तिक को इसमें संदेह नहीं होना चाहिए।

यम-नियम का पालन कर ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है। अतः मन मंदिर ही ईश्वर का मुख्य स्थान है। ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड की रचना करता है।

ईश्वर के मुख्य चार कार्य हैं:-

१.सृष्टि की रचना करना।

२.सृष्टि को धारण करना अर्थात् सम्पूर्ण जगत् की व्यवस्था करना।

३.समय आने पर अर्थात् सृष्टि का कार्यकाल पूरा होने पर प्रलय करना।

४.मानव को उसके कर्मानुसार फल देना।

महर्षि दयानन्द, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सृष्टि प्रकरण में कहते हैं कि- परमात्मा ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है।

शंकर ने सृष्टि को ईश्वर की लीला का फल कहा है।

आचार्य निम्बार्क के अनुसार ईश्वर अपनी शक्ति से जगत् की सृष्टि और उसका संहार करता है।

परमात्मा सृष्टिकर्ता है। वह सविता भी है क्योंकि इसी से सृष्टि प्रसावित हुई है। वर्तमान सृष्टि से पहले भी सृष्टि थी। सृजन के बाद विकास, विकास के बाद ह्रास और फिर प्रलय। यह इस सृष्टि का शाश्वत नियम है। यह क्रम सदा से चलता आ रहा

है, और आगे भी चलता रहेगा। सृष्टि प्रवाह से अनादि है। जीवन में नित्य प्रति घटने वाली घटनाओं में मानव जब देखता है कि संसार में कोई भी चीज बिना बनाए नहीं बनती जैसे कुम्हार के बिना घड़ा, जुलाहे के बिना कपड़ा, और सुनार के बिना आभूषण नहीं बनते। तब वह इस नियम की स्थापना करता है कि बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। जैसे घड़ा बनाने के लिए तीन का होना अनिवार्य है। कुम्हार, मिट्टी और दण्ड व चक्र। ऐसे ही सृष्टि की रचना के लिए तीन का होना अनिवार्य है। ईश्वर, आत्मा और प्रकृति।

इन तीनों कारणों के बिना संसार की कोई वस्तु नहीं बन सकती। इसी को वैदिक धर्म में त्रैतवाद की संज्ञा दी गई है।

घड़ा कुम्हार बनाता है।
ईश्वर संसार रचाता है।
सूरज चाँद उसी की रचना।
अपने आप कुछ नहीं बन जाता।
सत्यार्थ प्रकाश यही सिखाता।।

ईश्वर का मुख्य चौथा कार्य है, जीवों को कर्मों का फल देना। जिसलिए ईश्वर ने इस जगत् की रचना की है। ईश्वर न्यायकारी है। वह प्रत्येक जीव को उसके कर्मों के अनुसार फल देता है। न राई भर अधिक और न ही राई भर कम। **कर्म करने के पश्चात् जीव को उसका यथायोग्य फल भोगना ही पड़ता है। किए गए कर्म का फल कभी भी माफ नहीं होता।** एक ही आत्मा अपने कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य शरीर में तथा पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि शरीरों में घूमता रहता है। मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु ईश्वर फल देने में परतंत्र है। वह ईश्वर किसी को न कम और न ही अधिक दण्ड दे सकता है। आत्मा और शरीर के मिल जाने का नाम जन्म है। इनके अलग अलग हो जाने का नाम मृत्यु है। जीवन व मृत्यु जीवन की दो गतियाँ हैं जो ईश्वराधीन हैं। सृष्टि की तरह इनका प्रवाह भी अनादि है।

मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है मुक्ति पाना। जीवात्मा अति उत्सुक होने पर महान् प्रयत्न से प्रभु के दर्शन कर पाता है। ध्यान प्रभु दर्शन में अतिआवश्यक है। प्रभु की सत्ता का ज्ञान होता है परम पुण्य आस्तिक आत्मा को।

प्रभु के ज्योतिर्मय शुभ-स्वरूप का दर्शन होता है आत्मा में समाधि द्वारा। अतः प्रभु ज्ञेय, ध्येय, दर्शनीय, अनुभवनीय हैं। ईश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप एवं स्वप्रकाशस्वरूप महर्षि दयानन्द ने लिखा है। प्रभु प्राप्ति का आनन्द अनुभव का विषय है। प्रभु का आनन्द अनिर्वचनीय होने से उसका वर्णन वाणी द्वारा नहीं किया जा सकता। अतः ऋषियों ने उसे नेति-नेति कह कर पुकारा है।

वेदों में ऐसा वर्णित है कि ईश्वर शक्ति का मात्र दो प्रतिशत ब्रह्माण्ड की रचना में कार्य करता है और शेष ९८ प्रतिशत आनन्दमय है। मोक्ष के बाद मुक्ति अवस्था में जीव इसी आनन्दमय अवस्था का आनन्द भोगता है। आनन्दित होता है। अतः उपरोक्त लिखित वर्णन के बाद सब संशय दूर हो जायेंगे कि ईश्वर है या नहीं? कहाँ रहता है? और क्या करता है?

ओ३म् शांति, शांति, शांति इति।

सौम्य अपार्टमेन्ट बी-९
फ्लैट नं. १०१ ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.)
फोन नं. ०१४१-२६२३७३२, मो.९४६०१८३८७२

भारत रत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम के निधन पर श्रद्धाञ्जलि

कमाल का "कलाम"

आज समय का पहिया घूमा, पीछे सब कुछ छूट गया,
एक सितारा भारत माता, की आँखों का टूट गया।
उसकी आँखें बन्द हुई तो, पलकें कई निचोड़ गया,
सदियों तक न भर पायेगा, वो खालीपन छोड़ गया।
ना मजहब का पिछलग्गू था, ना गफलत में लेटा था,
वो अब्दुल कलाम तो, केवल भारत माँ का बेटा था।
बचपन से ही खुली आँख से, सपने देखा करता था,
नाविक का बेटा हाथों में, सात समन्दर भरता था।
था बन्दा इस्लाम का लेकिन, कभी न ऐंठा करता था,
जब भी चाहा सन्तों के, चरणों में बैठा करता था।
एक हाथ में गीता उसने, एक हाथ कुरान रखा,
लेकिन इन दोनों से ऊपर, पहले हिन्दुस्तान रखा।
नहीं शरियत में उलझा वो, अपनी कीमत भाँप गया,
कलम उठाकर अग्नि पंख से, अन्तरिक्ष को नाप गया।
दाढ़ी टोपी के लफड़ों में, नहीं पड़ा अलमस्त रहा,
वो तो केवल मिसाइलों के, निर्माणों में व्यस्त रहा।
मर्द मुजाहिद था असली, हर बन्धन उसने तोड़ा था,
अमेरिका को ठेंगा देकर, एटम बम को फोड़ा था।
मोमिन का बेटा भारत की, पूरी पहरेदारी था,
ओवैसी, दाऊद, सौ सौ अफजल गुरुओं पर भारी था।
आकर्षक व्यक्तित्व, सरल थे, बच्चों के दीवाने थे,
इस चाचा के आगे, चाचा नेहरु बहुत पुराने थे।
माथे पर लटकी जुल्फों ने, पावन अर्थ निकाल दिया था,
यूँ लगता था भारत माँ ने, आँचल सर पर डाल दिया था।
'गौरव' को गौरव है तुम पर, फक्र लिए हूँ सीने में,
जीना तो बस जीना है, अब्दुल कलाम सा जीने में।
माना अब भी इस भारत में, कायम गजनी बाबर हैं,
लेकिन ऐसे मोमिन पर, सौ सौ हिन्दू न्यौछावर हैं।

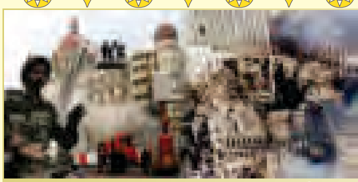

आतंक का अन्त

आज सुबह का सूरज हमको, गौरव का प्रतिमान लगा।
किरणों में थी शौर्य उष्मा, जागा हिन्दुस्तान लगा।।
बाइस वर्षों की पीड़ा को, आखिर मिली दवाई है।
फाँसी पर याकूब चढ़ा है, भारत माँ मुस्काई है।।
लेकिन सारे घटनाक्रम पर, जब नजरें दौड़ाता हूँ।
मन झुंझला जाता है मैं भी, अन्दर तक हिल जाता हूँ।।
देखो तो ये चपल मीडिया, क्या-क्या नहीं दिखाती है।
आतंकी की हर हरकत को, ब्रेकिंग न्यूज बताती है।।
कब सोया याकूब ? नाश्ता उसने कब स्वीकार किया।
कब कुरान को पढ़ने बैठा, कब कैसा व्यवहार किया।।
फाँसी के पहले का आलम, कुछ ऐसे दिखलाया है।
जैसे कोई लाल भगतसिंह, फाँसी चढ़ने आया है।।
शर्म करो ऐ न्यूज चैनलों, अब तक क्या मन भरा नहीं।
उन विस्फोटों में कोई भी, सगा तुम्हारा मरा नहीं।।
सबसे तेज खबर वालों, तुम भी जख्मों से जुड़ जाते।
अगर तुम्हारे अपनों के भी, वहाँ चीथड़े उड़ जाते।।
विस्फोटों के पीड़ित परिवारों, को क्यों बिसराया था।
आतंकी के खानदान पर ही, क्यों दिल भर आया था।।
भूल शहादत सब दहशत पर, नर्म दिखायी देते हैं।
चैनल वाले छटे हुए, बेशर्म दिखायी देते हैं।।
भूषण सा खरदूषण, रावण की माफी को आया था।
आधी रात कई काले कोटों ने शोर मचाया था।।
गद्दारों की नहीं चली, भारत का मान बचाना था।
फाँसी पर पापी लटकाकर, नया सवेरा लाना था।।
पर 'गौरव चौहान' कहे सारे बवाल निपटा देते।
जितने थे हमदर्द उन्हें भी, फाँसी पर लटका देते।।

रचनाकार-कवि गौरव चौहान, इटावा (उत्तरप्रदेश)
मोबाइल ०९५५७०६२०६०

हिन्दी दिवस पर विशेष

ऋषि दयानन्द के साहित्य का भाषागत अध्ययन

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

'उनके विचारों में कहीं अस्पष्टता और रहस्यवादिता नहीं मिलेगी। विवेकानन्द को छोड़कर इतना अटूट आत्मविश्वास अन्यत्र नहीं मिलता। ऋषि दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज का गद्य के परिष्कार में अभूतपूर्व योग है।' (हिन्दी साहित्य का इतिहास) डॉ.नागेन्द्र पृ.४५०

'समस्त भारत में आर्य समाज, स्वामी दयानन्द, मूर्तिपूजा, शास्त्रार्थ, विरोधी पक्ष-खण्डन, स्वपक्ष-प्रतिपादन की धूम सी मची हुई थी। अतः हिन्दी गद्य को प्रबलता ओज, व्यंग्य, वक्रता आदि की जो नवीन प्राप्ति हुई वह भुलायी नहीं जा सकती।'

(हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्य समाज की देन-डॉ. लक्ष्मीनारायण गुप्त पृ. ६७-६८)

'इस ग्रन्थ ने हिन्दी के दार्शनिक ग्रन्थों की शैली को जन्म दिया, फलतः हिन्दी में समस्त उपनिषदों के भाष्य आरम्भ हुए और दर्शनों के भी अनुवाद हुए।' -डॉ. सत्यप्रकाश

'स्वामी जी का गद्य संस्कृतमय है। उसमें ओज हास्य और व्यंग्य पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। वस्तुतः स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने हिन्दी के प्रचार एवं हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।'

(हिन्दी साहित्य और उनकी प्रमुख प्रवृत्तियां- गोविन्द राम शर्मा पृ. ५३४)

'खड़ी बोली हिन्दी के शैशवकाल में अपनी शैलीगत विशेषताओं के कारण ऋषि दयानन्द ने सहज भाव से हिन्दी गद्य को गम्भीर, सरल, ओजस्वी, सशक्त, प्रभावशाली ओर साथ ही रोचक व लचीला भी बना दिया। हिन्दी साहित्य को उनकी सबसे बड़ी देन यही गद्य है।'

(स्वामी दयानन्द, भारतीय साहित्य के निर्माता- विष्णु प्रभाकर, पृ. ८८-८९)

'ऋषि दयानन्द की हिन्दी विशुद्ध सांस्कृतिक तथा प्रभावशाली है। उनकी भाषा, विषय को एकदम स्पष्ट रूप से हमारे सामने रखती है। वह छन्द और अलंकारों के बन्धन से सर्वथा मुक्त है ताकि अभिप्राय शीघ्र समझ में आ जाए और अर्थ का अनर्थ न हो सके। व्याकरण संबंधी त्रुटियों का भी अभाव है। भावों की ओजस्विता ने भाषा को ओजपूर्ण तथा प्रभावशाली बना दिया है। उनकी भाषा को हम ओजपूर्ण व्यंग्य प्रबलता तथा प्रवाह से भरपूर पाते हैं, वह निर्दोष तथा मंझी हुई है। उनकी भाषा में भाषा के सर्वोपरि गुण सरलता प्रसाद तथा प्रवाह पाये जाते हैं।' (ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन- डॉ. मंजुलता विद्यार्थी, पृ. २८१)

'धर्म प्रचारक दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी गद्य को भावाभिव्यंजना और कटाक्ष की शक्ति दी।'

(आलोचना के बदलते मानदण्ड और हिन्दी साहित्य- डॉ.शिवकरण सिंह पृ. ३७४)

'खड़ी बोली हिन्दी के शैशवकाल में ऋषि दयानन्द के साहित्य ने हिन्दी गद्य को गम्भीर, सरल, ओजस्वी, सशक्त प्रभावशाली तो बनाया ही, साथ ही उसे रोचकता और लचीलापन भी प्रदान किया। उन्होंने भाषा को निखारा तथा प्राणवन्त बनाया। साथ ही भाषा को सरल व सुबोध बनाने की ओर उनका ध्यान सदैव रहता था। राजा लक्ष्मणसिंह का दृष्टिकोण अपनाकर उन्होंने हिन्दी को बोझिल और केवल विद्वत् समाज की भाषा नहीं बनने दिया। उनकी हिन्दी से न तो 'गवाह' निर्वासित हुआ और न ही 'कलक्टर' को धक्का दिया गया। वे तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग भी सन्तुलित रूप से करते थे। 'सर्व' के साथ साथ 'सबका' व्यवहार भी किया करते थे।'

(आर्य समाज का इतिहास भाग ५- सत्यकेतु विद्यालंकार पृ. ५४०)

'किसी भी भाषा के शैशवकाल में ऐसा होना आश्चर्यजनक नहीं है। लेकिन उसके बाद निरन्तर बोलते और लिखते लिखवाते रहने के कारण उनकी भाषा में निखार ही नहीं आता गया बल्कि अभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता भी पैदा हो गई। वह अब प्रौढ़, परिमार्जित और प्रांजल हो गई थी। उन्होंने सहज भाव से हिन्दी गद्य को गंभीर सरल, ओजस्वी, सशक्त, प्रभावशाली और साथ ही रोचक और लचीला भी बना दिया।'

(स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय साहित्य के निर्माता- विष्णु प्रभाकर पृ. ८६-८९)

'जनता के लाभ की दृष्टि से मातृभाषा गुजराती होने पर भी उस दूरदर्शी विद्वान् संन्यासी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का ही प्रचार किया। अपने ग्रन्थ भी हिन्दी में ही लिखे। हिन्दी की उन्नति और प्रचार आर्य समाज का जिसके वे प्रवर्तक थे, एक विशेष लक्ष्य बनाया। अकेले स्वामी जी ने हिन्दी का जितना उपकार किया, हमारा अनुमान है कि अनेक सुसंगठित संस्थाओं ने मिलकर भी अब तक उतना नहीं कर पाया है।'

(हिन्दी भाषा सार- लाला भगवानदीन और प्रो.रामदास गौड़ पृ. ६२)

'वे (ऋषि दयानन्द) हिन्दी की व्यापकता के महत्व को समझते थे। उन्होंने पुरानी फक्कड़ी हिन्दी को नहीं अपनाया। उनकी हिन्दी एक विशुद्ध सांस्कृतिक और प्रभावशाली भाषा थी। जिसने पंजाब और उत्तर भारत में हिन्दी को अपरिमित बल और दीर्घ जीवन दिया।'

(हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास- चतुरसेन शास्त्री पृ. ४५८)

'यह (सत्यार्थ प्रकाश) आधुनिक हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है। इसने हिन्दी के अशक्त गद्य को समर्थ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस ग्रन्थ की सरल तत्सम प्रधान शैली ने हिन्दी को स्थिरता प्रदान करने में प्रमुख हाथ बटाया है। हिन्दी को नई चाल में ढालने में स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान भारतेन्दु हरिशचन्द्र से कम नहीं है।' (हिन्दी गद्य साहित्य- डॉ. चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे पृ. १०७)

'हिन्दी साहित्य में जिन संदर्भ-गर्भ और शास्त्र प्रमाण्य-समलंकृत शैलियों का विकास हुआ है, उन पर स्वामी जी (ऋषि दयानन्द) की शैली का प्रभाव बड़ी दूर तक खोजा जा सकता है।' (हिन्दी गद्य साहित्य-डॉ.

'स्वामी दयानन्द के प्रभावशाली सुधारवाद ने हिन्दी की भावी उन्नति के मार्ग को प्रशस्त किया था।' -मिश्र-बन्धु-विनोद, तृतीय खण्ड पृ. ४

(नोट मिश्र बन्धु विनोद में संवत् १९१६ से १९२५ तक के युग को दयानन्द काल के नाम से अभिहित किया है।)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के हिन्दी साहित्य के योगदान के संबंध में हिन्दी के प्रसिद्ध विचारकों में से कुछ की सम्मति उद्धृत की गई है।

क्रमशः ....

- श्रुति-सौरभ
इंजीनियर्स कॉलोनी, धनवन्तरी नगर
उमरी, अकोला- ४४४००५

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - 313001

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।

☞ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।

☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।

☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।

☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।

☞ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।

☞ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।

☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।

☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

दृष्टिकोण

मक्का भावना और हम

लेखक- श्री पंडित जगत् कुमार शास्त्री

मनुष्यपूजा, कब्रपूजा और समाधि-पूजा करना, किसी मनुष्य विशेष के जन्मस्थान अथवा मरणस्थान पर पुण्य-प्राप्ति की कामना से जाना, वहाँ चढ़ावे चढ़ाना, रोना, गिड़गिड़ाना, रस्मों रिवाजों और तथाकथित धार्मिक वा स्मृति-विशेष कृत्यों का सम्पादन वहाँ करना और उस स्थान विशेष में अलौकिक महत्व या पवित्रता का आरोपण करना आदि ही मक्का भावना के परिचायक कर्म हैं। इसे मक्का भावना कहने और समझने में विशेष हेतु है। मनुष्य पूजाओं के विभिन्न रूप और प्रकार आदि तो पौराणिकों, जैनियों, ईसाइयों, मूसाइयों और सिक्खों में भी प्रचलित हैं परन्तु कट्टरता में वे सब मुहम्मदियों की कट्टरता से कम ही हैं। एकेश्वरवाद का उद्घोष जो इस्लाम की एक बड़ी विशेषता है वह भी इस मक्का भावना के सामने निस्तेज हो चुका है। सिक्खों में प्रचलित मनुष्यपूजा अर्थात् गुरुडम पर तो कालदर्शी श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने पुस्तकपूजा का एक नया प्रयोग चलाकर कुछ प्रतिबन्ध भी लगाया है। उन्होंने पूर्व गुरुओं की पूजा का निषेध तो नहीं किया परन्तु ग्रन्थसाहेब की प्रतिष्ठा गुरुपद पर करके गुरुडम को आगे बढ़ने से रोक अवश्य दिया। उनके प्रयत्नों में जो आंशिक सफलता हुई वह कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है।

यह मक्का भावना मनुष्य को पक्षपाती, अनुदार, बहिर्मुख, आत्मद्वेषी, संकीर्ण, झगड़ालू, अन्धविश्वासी, नास्तिक और कूपमण्डूक बनाती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस मक्का भावना के प्रबल निवारक और सब प्रकार की मनुष्य पूजाओं को हटाकर एकेश्वरवाद का प्रचार करने वाले एक बड़े महापुरुष थे।

मथुरा, अयोध्या, वाराणसी, हरिद्वार, ननकाना, लुम्बनी, वैशाली, कुशीनगर, अजमेर, मक्का, मदीना और अब हमारे ऋषि से सम्बन्धित स्थान भी इत्यादि नगर जो विभिन्न महापुरुषों के जन्मस्थान, मरणस्थान अथवा उनके जीवन की किसी विशेष घटना से सम्बन्धित स्थान हैं, उनकी अलौकिकता, महात्म्य और यात्रा आदि के प्रतिपादक सब आन्दोलन उक्त मनुष्यपूजा की मक्का भावना के ही प्रतिफल हैं।

मक्का हजरत मुहम्मद का जन्म स्थान है, मथुरा योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, अयोध्या मर्यादा पुरुषात्तम श्री राम का, ननकाना गुरुनानक देव का, लुम्बनी महात्मा गौतम बुद्ध का, वैशाली भगवान महावीर का और टंकारा महर्षि दयानन्द का। विभिन्न मतमतान्तरों वाले लोग अपने मान्य अथवा मत प्रवर्तक महापुरुषों के जन्म स्थानों की यात्राएँ विशेष समारोह के साथ करते हैं। कई प्रकार के दर्शन भी वहाँ पर किए कराये जाते हैं। मक्का और मथुरा आदि के अलौकिक महत्व को नाना प्रकार से सूचित करने वाला साहित्य बहुत अधिक रचा जा चुका है। ऐसे साहित्य का संवर्धन भी होता रहता है, संस्कार और प्रचार भी। ऋषि स्मृति से जुड़े स्थल इस श्रेणी में अभी नए हैं। प्रगति करके अब तेजी के साथ ये भी औरों के बराबर आ रहे हैं।

इस मक्का भावना के विषय में हमारी अर्थात् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुगामी आर्यसमाजियों की सामाजिक, व्यावहारिक, वैधानिक, सैद्धान्तिक और मनोवैज्ञानिक आदि स्थितियाँ क्या-क्या? कैसी-कैसी हैं? इस विषय में दूसरे मतमतान्तर वालों से हम किस बात में भिन्न हैं? अथवा क्या हम भी उनके समान ही हैं? ये प्रश्न हम अपने अपने अन्तरात्मा से ही पूछें। जो उत्तर मिले, उस पर महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों और मन्तव्यों के आधार पर विशेष विचार करें।

वीरपूजा का सिद्धान्त उत्तम है। मैं इसका विरोधी नहीं। वीरों और महापुरुषों के अनुगमन, उनके उपदेशों के प्रतिपालन, उनके अधूरे कार्यों की पूर्ति, उनके उपदेशों का अनुष्ठान कर सकते हैं। यदि लोक दिखावे और मेरे-तेरे के आधार पर राग द्वेष के शीघ्र ही भड़क उठने वाले भावों को न भड़काया जाये, तो यह वीर पूजा का सिद्धान्त मानव जीवन को सरस और स्निग्ध बनाने में अधिक सहायक हो सकता है। महापुरुषों को महापुरुष ही समझा जाये। ईश्वर के दूत, पूत, अवतार, प्रतिनिधि आदि उन्हें न बनाया जाये। अपनी योग्यता को साधना द्वारा बढ़ाकर महापुरुष का पूरा व आंशिक, अनुकरण

हम अवश्य ही कर सकते हैं। ईश्वर के दूतों, पूतों, अवतारों आदि के अनुकरण का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता। वे तो मानवता की पहुँच से परे ही होते हैं।

मानव स्वभाव में वर्तमान एक दुर्बलता हजारों लाखों वर्षों से अपना काम कर रही है। कुछ थोड़े लोगों को छोड़कर अधिकांश लोग उस दुर्बलता के वशीभूत हो जाया करते हैं। यह दुर्बलता यह है कि कोई मनुष्य जब अपने मान्य महापुरुष के प्रति उत्कृष्ट प्रेम करने लगता है तब वह विशेषणों, अलंकारों और किंवदन्तियों आदि के द्वारा अपने मान्य महापुरुष के महत्व को बढ़ाते-बढ़ाते इतना बढ़ाता है कि वह अलौकिक बन जाता है, चमत्कारिक बन जाता है, साधारणतया से पृथक् रूप धारण कर लेता है और तभी ''सुन्दरं प्रकृवीणो, रचयामास वानरम्'' की उक्ति चरितार्थ होने लगती है।

पिछले एक सौ वर्षों में महर्षि दयानन्द जी की प्रशंसा में विभिन्न भाषाओं में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। अभी और भी बहुत कुछ लिखा जायेगा। महर्षि दयानन्द के जीवन में सचमुच ऐसा बहुत कुछ है जो कवियों, लेखकों, विचारकों और विद्वानों को आकर्षित ही नहीं करता उन्हें मुखर भी बनाता है, उन्हें भाव-प्रकाशन के लिए विवश भी करता है। जब चक्कर चलता है तो सभी को अपने-अपने संस्कारों, विचारों के अनुसार मनमौजीपन का अवसर खूब मिल जाता है। इस विषय में किसी की ओर इशारा करना भी कठिन है। इस स्थिति में तो महापुरुष के जय निनादों की तुमुलध्वनि में उस महापुरुष के विशेष सिद्धान्तों का गला घोटा जा सकता है। बहुत से महापुरुषों के प्रति यह क्रूर व्यवहार हो चुका है। खेद है कि अब महर्षि दयानन्द के प्रति भी यह हो रहा है। शोक। शोक

मुसलमानों ने अपने हजरत मुहम्मद की महिमा का एक गीत बनाया था 'तोहीद का डंका आलम में बजवा दिया कामली वाले ने।' हमने इसे अपने महर्षि पर चिपका दिया 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।' कवि को कभी 'ऋषि दयानन्द' प्रयोग कुछ हल्का लगा तब उसने स्वयं ही बदला और भारी बनाना चाहा- 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया देव दयानन्द ने'। किसी पौराणिक ने कृष्ण को बुलावा भेजा था- 'वंशीवालिया श्यामा तेरे आवण दी लोड' इधर से भी दयानन्द को बुलावा भेजा गया। किसी ने सोचा भी नहीं कि बुलावा पहुँचेगा कहाँ? 'वेदां वालिया ऋषियाँ तेरे आवण दी लोड'। इस प्रकार महर्षि दयानन्द को भी अवतारों की श्रेणी में बैठा दिया गया। अनजाने में ही सन्त कबीर और गुरु नानक देव प्रभृति सन्तों के लिए प्रयुक्त विशेषण ही नहीं, कुछ प्रचलित घटनाक्रम भी महर्षि दयानन्द के साथ जोड़े जाते हैं। हजरत मुहम्मद की महिमा जैसी कव्वालियों और अन्य कवितायें प्रायः गाई जाती हैं, वैसी ही महिमा, वैसी ही कविताएँ आदि हमने अपने महर्षि दयानन्द की भी विकसित कर ली हैं, जोड़ तोड़ करके प्रचलित भी कर दी हैं।

हमारे सत्संगों और प्रचार प्रसंगों में जब गायन, वादन और भाषणों आदि के आयोजन होते हैं तब ईश्वर भक्ति और

सिद्धान्त निरूपण आदि के साथ ही महर्षि दयानन्द की महिमा के गीत भी खूब गाये जाते हैं। महर्षि दयानन्द को पंजाबी समुदायों में कुछ अधिक सफलता मिली थी। पंजाबी भाई मुसलमानों और सिक्खों आदि के साथ संपर्कों और संघर्षों में उनकी पैगम्बरभक्ति तथा गुरुभक्ति को देखते और उससे प्रभावित होते थे। पंजाबी आर्यों (हिन्दुओं) के पास जो श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि के नाम और काम पहले से ही मौजूद थे वे पौराणिक अंक में लिप्त होकर अपनी चमक खो चुके थे। अतः पैगम्बरों और गुरुओं के साथ तुलना के लिए महर्षि दयानन्द को ही नये रूप में विकसित और प्रतिष्ठित कर लिया गया। काम धीरे-धीरे हुआ। किसी व्यक्ति विशेष ने नहीं, अपितु मानव स्वभाव में मौजूद पुरानी दुर्बलताओं ने ही यह काम किया, यह काम सामुदायिक भ्रान्तियों, योजनाओं और भावनाओं आदि का परिणाम है।

वेदप्रिय, आचार्य चमूपति एम.ए. ने महर्षि दयानन्द की महिमा के गीत विशेष उल्लास के साथ बनाये और गाये थे। उनके प्रसिद्ध काव्य 'दयानन्द आनन्द सागर' में एक स्थान पर है- 'ए दयानन्द। हमको तेरा डर है, नहीं तो हम तेरी पूजा करते।' महर्षि दयानन्द ने मरणोपरान्त अपनी भस्म को खेतों में बिखेरने की वसीयत की थी। शायद जनसाधारण की अतिवादी श्रद्धा को उन्होंने देखा होगा, उसके कुपरिणामों को भी विचारा होगा और इसलिए अपनी पूजा के उपक्रमों की संभावनाओं को भी मिटाना चाहा होगा। अन्यथा मठाधीश, पन्थ प्रवर्त्तक और अवतार बनाना या कहलाना उनके लिए कठिन न था। आजकल के आर्यसमाजियों में आस्तिकता, श्रद्धा, यज्ञभावना, वेदप्रेम आदि की कमी हो सकती है दयानन्द-भक्ति की कमी नहीं है। यदि कोई कहे कि दयानन्द भक्ति तो कृतज्ञताज्ञापन के लिए ही है। इसका विरोध मैं न करूँगा। इस कार्य में आर्ष मर्यादाओं का अतिक्रमण न होना चाहिए, आर्यों के इतिहास में

और भी बहुत से ऋषि हो चुके हैं, उनके प्रति भी आवश्यक कृतज्ञता ज्ञापन होता रहे। बड़ी बात यह है कि नानकपन्थी, दादूपन्थी, कबीरपन्थी, मुहम्मदी, ईसाई, मूसाई आदि जैसा कोई नया पन्थ जानबूझकर या अनजाने में ही न चलाया जाए। अवतारों की बाढ़ के लेखक ने भी महर्षि दयानन्द का हवा में उड़ना और पानी पर चलना लिख दिया है। 'योगी की आत्मकथा' नाम की पुस्तक तो कल्पना प्रसूत उपन्यास या दयानन्द पुराण ही है। मनमौजियों ने उन्हें अजीमउल्ला खां, नाना धोन्दूपन्त पेशवा, झांसी की रानी आदि का साथी भी बना डाला। क्या यह उचित न होगा कि हम अपने महर्षि की गौरव-रक्षा के लिए उनके मन्तव्यों की रक्षा के लिए विचार और आत्म सुधार करें?

साभार- आर्य मर्यादा
४ मार्च १९७३

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १४ पर देखें।

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

I intended to write an article about **Swami Dayanand Saraswati**. He has proved great example for us. The story and pictures displayed in **ARYAVART** art gallery are inspiring. This story and pictures will certainly help me in writing an article. It's very-very impressive and people work here maintained the gallery beautifully. It gives me immense pleasure to visit this wonderful art gallery.

-Shuchita Jhala Sec. 3, Hiranmagari, Udaipur

योगीराज का जन्म दिवस

युग निर्माता योगी जी का, आओ दिवस मनायें हम।
अर्जुन सम जो बने कापुरुष, उनको वीर बनायें हम।
निमित्त होकर श्रीकृष्ण जी, जब जगती में आये थे।
सन्तों का परित्राण किया था, अत्याचार मिटाये थे।।
आओ चक्र सुदर्शन धारें, अत्याचार मिटायें हम।
युग निर्माता योगी जी का ....।
नीतिशास्त्र के पंडित थे वे, रण के कुशल खिलाड़ी थे।
विप्रजनों में विप्र, युद्ध में शस्त्र शिरोमणि धारी थे।
शिक्षायें उनकी अपनाकर जीवन सफल बनायें हम।
युग निर्माता योगी जी का ....।
नई चेतना पा अर्जुन ने, रण में धूम मचाई थी।
दुष्टजनों पै काबू पाकर दुनियाँ को दिखलायें हम।
युग निर्माता योगी जी का ....।
जीवन के संग्राम में आकर, नाम न लें विश्राम का।
गीता का सिरमौर देश हो, जगद्गुरु कहलायें हम।
युग निर्माता योगी जी का ....।

प्रखर शिक्षाविद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ. देवव्रत जी को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। १२अगस्त २०१५ को हिमाचल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति मंसूर अहमद मीर ने आचार्य जी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी। आचार्य जी ने संस्कृत में शपथ ली।

आचार्य जी को मिले इस सम्मान से आर्य जगत् में प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गयी है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से आचार्य देवव्रत जी को अनेकशः शुभकामनाएँ एवं बधाई।

- अशोक आर्य

प्रपीड़क पंचक

– देवनारायण भारद्वाज

१ – कर रही तरंगे – तंग-तंग

पुरातन काल में कोई लोकप्रिय और चरित्रवान शासक थे। उनके सभी कर्मचारी व अधिकारी भी वैसे ही ईमानदार थे। वहाँ कोई घूस की धौंस नहीं चलती थी। समय-समय पर बिगड़े काम बनाने वाला, वहाँ एक योग्य कर्मचारी था। जब शासक के पास उसके सम्बन्ध में घूस लेने की शिकायतें आने लगीं, तब उन्होंने सोचा कि इस कर्मचारी को सेवा मुक्त भी न करना पड़े अतएव उसे ऐसे काम पर लगा दिया जाये, जहाँ घूस लेने का कोई अवसर ही उसको न मिले। उन्होंने इसको समुद्र के किनारे समय काटने के लिए बैठा दिया। उसने कहा- मैं खाली बैठे-बैठे यहाँ क्या झक मारूँगा? कुछ काम भी बताइए। शासक ने टालने के लिए कह दिया- 'अच्छा, तो तुम समुद्र की लहरें गिनते रहना।' यह तो उसके लिए शासक का आदेश हो गया। जब कोई जहाज वहाँ से गुजरने लगे, कर्मचारी उसको रोक दे; क्योंकि उसके लहरों के गिनने में बाधा पड़ रही थी, अन्तत्वोगत्वा जहाज के आने-जाने के लिए उसके मालिक को घूस का ही सहारा लेना पड़ता था। अब तो घूस का नाम ही लोगों ने बदल दिया है- सुविधा शुल्क।

समुद्र की लहरों को यहीं छोड़कर अब आकाश की तरंगों की चर्चा करते हैं। यही वह तरंगें हैं, जिनके माध्यम से कम्प्यूटर, टेलीविजन एवं मोबाइल आदि यंत्रों के संजाल सक्रिय होते हैं। अब स्थिति यहाँ तक गम्भीर हो गई है कि इन तरंगों से अश्लील, अपराधपूर्ण, अनैतिक, अत्याचारी व अनहोनी घृणास्पद वार्तायें व दृश्यावलियाँ प्रसारित हो रही हैं, जिनके कारण उत्पन्न मानसिक प्रदूषण व्यावहारिक जीवन का सत्यानाश करता चला जा रहा है। बाल अपराध, वृद्ध अपराध, नारी अपराध, यौन अपराध, परिवार अपराध आदि अपराध ही अपराध बढ़ते जा रहे हैं। पुरातन काल में समुद्र की लहरों को गिनने के बहाने से जहाजों को रोकने का प्रसंग कैसा भी हो, किन्तु आज इन तरंगों के माध्यम से चलने वाले उक्त विनाशकारी यन्त्रों के संचालन को नियन्त्रित करने की नितान्त आवश्यकता है, जो चरित्रभ्रंश-विध्वंस के साधन बने हुए हैं और राष्ट्र में हा-हा कार मचा रहे हैं।

२ – भाग भेड़, भेड़िया आया

आपने एक लघु गाथा सुनी होगी? नदी के किनारे एक बकरी या भेड़ का मेमना पानी पी रहा था। नदी के ऊपरी भाग पर- जिस ओर से नदी का पानी नीचे बहता है, एक शेर का शावक (बच्चा) पानी पीने आया। उसने कहा- 'अरे मेमने, तू मेरा पानी झूठा कर रहा है, मैं तुझे खा जाऊँगा।' मेमने ने कहा- 'मैं निचले भाग में पानी पी रहा हूँ, जो वहाँ से आता है, जहाँ से आप पीकर झूठा कर रहे हैं- श्रीमान्।' शेर को मेमने को मारकर खाना ही था, तो उसने नया बहाना बनाया और बोला- 'अच्छा, तू झूठा नहीं कर रहा है, तेरे पुरखों ने झूठा किया होगा, मैं तुझे खा जाऊँगा।' सार यह है कि तब किसी निर्बल को सताने-मारने-खाने के लिए किसी शक्तिशाली को कोई आधार या बहाने की आवश्यकता रहती थी, किन्तु आज कंकरीट के जंगलों में पाये जाने वाले शेर या भेड़िये ऐसे हैं, उन्हें जहाँ कहीं भी भेड़ दिखाई देती है, तो उनकी भूख बढ़ जाती है और वे उसे कहीं भी पकड़ कर खा जाते हैं। ये भेड़िये घर, बाहर, बाजार, कार्यालय, विद्यालय, चिकित्सालय या आरक्षालय, कहीं भी मिल सकते हैं। नन्हीं बालिकायें, युवतियाँ या अन्य कोई भी अबलायें हों, उनके सम्बन्धियों के समक्ष ही दैत्यों के द्वारा हवस की शिकार बना ली जाती हैं। सम्बन्धी, आरक्षक, अध्यापक, चिकित्सक, वाहन चालक या अन्य किसी भी कुत्सित रूप में भेड़िये प्रकट हो जाते हैं। कारण यही है कि अब बच्चों के दीक्षा गुरु दूरदर्शन के जघन्य दृश्य हो गये हैं, जिन्होंने 'मातृवत् परदारेषु' उपदेश को भुलाकर भोग-भोग-भोग की दृश्यावली बढ़ा दी है। शासन स्तर पर इनका नियन्त्रणकारी संगठन तो

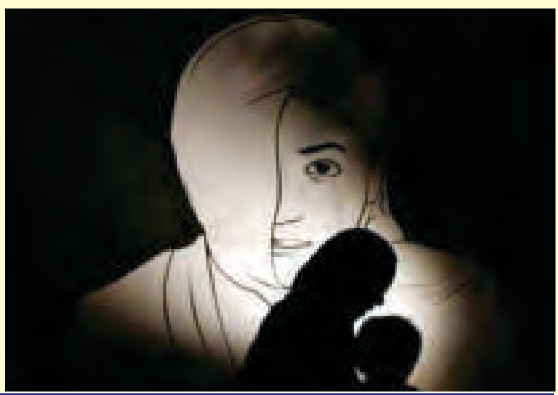

है। किन्तु उसमें गठन कितना है वह इसी विकराल विघटन से पता चलता है।

३-चन्दन-क्रन्दन, रक्त-रक्त- आन्ध्र प्रदेश के चन्दन तस्कर बड़ी संख्या में तीर कमान, कुल्हाड़ी लेकर चन्दन के वृक्षों को काट रहे थे। इनमें बीस तस्कर पुलिस के द्वारा मार दिये गये। मारे गये लोगों में अधिकतर पड़ोसी राज्य तमिलनाडु के निवासी थे। तस्कर हैं तो पुलिस पर भी आक्रमण कर सकते हैं। दूसरे राज्य के होने के कारण यह घटना विवाद का कारण बन गयी और उस राज्य ने मृतकों के परिवारों के लिए राहत राशि की घोषणा भी कर दी होगी। चन्दन की प्रजाति रक्त चन्दन के नाम से जानी जाती है, जो दुर्लभ होती है और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इसका मूल्य दो करोड़ रुपये प्रति टन हो सकता है। केवल चन्दन ही क्या अब ऐसी कोई वस्तु नहीं बची है, यहाँ तक कि बालू, मिट्टी, कंकड़-पत्थर जो खुदायी कर भवन निर्माण में प्रयोग होती है, उसकी तस्करी होती है। भक्त कवि की वह पंक्ति- 'चन्दन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग' को एक ओर ढ़केलकर, भुजंग (तस्कर) चन्दन में विष व्याप्त करने की बात तो दूर, उनके वृक्षों को ही काट-पीट कर नष्ट कर देते हैं और उनसे अपनी भोग वासना के लिए जेबें गरम कर लेते हैं। सघन चन्दन धन ही नहीं सम्पूर्ण भारत का नन्दन बन अब यत्र-तत्र-सर्वत्र रक्त-रंजन से क्रन्दन करता दिखाई देता है। पुरानी दिल्ली में एक मोटरसाईकिल सवार कार से टकरा गया। कार सवारों ने उसे इकट्ठी हुई भीड़ के मध्य और उसके बच्चों के सामने ही इतना पीटा कि उसने दम तोड़ दिया। पुकार लगाने पर उसे कोई बचाने के लिए आगे नहीं

बढ़ा। समाज की यह विषाक्त स्थिति कुछ वर्षों से बनी है, क्योंकि आरक्षक तन्त्र इनका संरक्षण नहीं कर पाता है और वे स्वयं आक्रामक लोगों के निशाने पर आ जाते हैं। एक तान्त्रिक द्वारा नये स्थापित स्पेलर की सफलता के लिए एक बारह वर्षीय बालक को टुकड़े-टुकड़े करके पीस दिया। वे लोग पकड़ तो लिये गये, किन्तु दण्डित होंगे या नहीं यह भविष्य के गर्भ में ही रहेगा। नित्य प्रति होने वाली इन पीड़ाजनक घटनाओं से राष्ट्र में क्रन्दन बढ़ता जा रहा है, अब तो शासन तंत्र में मंत्री पद प्रतिष्ठित व्यक्ति भी ट्रेन, बस, कार आदि में इन क्रूरकर्माओं के हाथों चढ़ते देखे जा रहे हैं। जब राष्ट्र रक्तरंजित होगा तो चन्दन भी क्रंन्दन मण्डित हो जायेगा। यथार्थ बाल-संस्कारों का प्रसार ही इसका परिष्कार कर सकता है जिनकी ओर किसी का ध्यान नहीं है। उनका पूरा ध्यान इसी में है कि वे अपने बच्चों को परिवार से दूर करते चले जाते हैं। बाल-गृह, प्लेग्रुप, एल.के.जी., यू.के.जी. से टेन प्लस टू, विश्वविद्यालय, व्यावसायिक प्रतियोगिता, प्रशिक्षण फिर सेवा में नियुक्ति के बाद बाल से युवा बनी सन्तति नैतिक संस्कार से दूर, अति दूर होकर वित्त व्यापार से जुड़कर परिवार को तार-तार करती चली जा रही है। भारत के विशाल तंत्र में खो गये नीति मंत्र को खोजकर वापस लाने की आवश्यकता है।

४-रजक वाक्य और रामराज्य

अपनी गर्भवती पत्नी देवी सीता को श्रीराम ने वन में छुड़वा दिया, इसका कारण राज्य प्रजा के सेवक किसी रजक का तथाकथित कटुवाक्य 'मैं राजा राम नहीं हूँ जो महीनों रावण के यहाँ रहने के बाद भी अपनी पत्नी को स्वीकार कर लेते हैं।' इस वाक्य का अस्तित्व विवादास्पद है। इस वाक्य में श्रीराम पर व्यक्तिगत कटाक्ष तो हो सकता है, किन्तु उनके रामराज्य के प्रति कोई आक्षेप नहीं है। भारत में पुरातनकाल से ही लोकप्रिय शासन रहा है। राजा प्रजा को पुत्रवत् मानकर चलता था। यदा-कदा अपवाद होने पर भंयकर प्रतिवाद भी हो जाता था। 'जितने मुँह उतनी बातें' के अनुसार 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' के अनुसार शासन नहीं चलता था।

भारत के वर्तमान गणतंत्र में संसद में विरोधी पक्ष ही नहीं विरोधी नेता का होना आवश्यक माना जाता है। विवाहोपरान्त परिवार में नववधु का आगमन हुआ। हल्के-फुल्के मनोरंजन की दृष्टि से सम्बन्धी व परिवारीजन वहाँ एकत्र हुए। हँसी-हँसी में संसद व मन्त्रिमण्डल के पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया चालू हो गई। परिवार के मुखिया राष्ट्रपति, उनकी पत्नी उपराष्ट्रपति, बड़े पुत्र प्रधानमंत्री, उनकी पत्नी गृहमंत्री यहाँ तक कि सभी छोटे बड़ों पदों का बंटवारा हो गया। तभी नववधु से उनके पद के विषय में पूछ लिया गया। वह चुप रही। कई बार ननदों के उकसाने पर आखिर उसे बोलना ही पड़ा। संसद एवं मन्त्रिमण्डल के पदों का निर्धारण आप लोगों ने कर ही लिया है। आप लोगों ने

स्वयं ही बचा बचाया पद मेरे लिए छोड़ दिया है। वह है नेता विरोधीदल। नववधु से कोई नाराज इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि इसके लिए उसके कान में एक नन्हीं ननद रानी ने ही फुसफुसाया था।

आइए, भारत राष्ट्र की स्थिति का अवलोकन करें। श्री नरेन्द्र

मोदी को प्रधानमंत्री बने एक वर्ष हुआ है। उनका एक पैर देश में दूसरा पैर विदेश में रहता है। प्रत्येक प्रवासी भारतवंशी में स्वाभिमान की लहर जग आई है। सर्वत्र भारत का गौरवगान हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत का बड़ा सुधारक बताया है, उन्होंने 'टाइम' पत्रिका में प्रशंसा करते हुए कहा है 'भारत की तरह मोदी भी प्राचीन और आधुनिकता को ऊँचाइयों पर ले जाते हैं। वह योग पद्धति के प्रबल समर्थक हैं। ट्विटर के जरिये भारतीयों से जुड़ते हैं और डिजिटल भारत की कल्पना करते हैं। (दैनिक हिन्दुस्तान १७.०४.२०१५)। इधर भारत के समाचार पत्रों के शीर्षकों में प्रकाशित हो रहा है, मोदी से मुकाबले को बना मोर्चा, जिसमें छः दल सातवें विविध विरोधी मिलकर सत्ता लोलुपता हेतु चक्रव्यूह की रचना में लग गये हैं। सत्ता पक्ष-विपक्ष का क्या यही प्रयोजन है कि उसे विरोधी पक्ष के रूप में शासन के हर हितकारी निर्णय का विरोध ही विरोध करना है।

५-कनक-ती-वती तथा क्रिया-ती-वती

अंग्रेजी स्वयं ही अपने शब्दों को बिना नियम के तोड़ मरोड़ कर बोलती रहती है। वह But को बट और Put को पुट कहती है। हमने भी उपरोक्तानुसार यहाँ पर शब्दों का रूपान्तरण कर लिया है। एक शब्द है कनेक्टिविटी (Connectivity) उसको कनक-ती-वती और दूसरा शब्द है-क्रियेटिविटी (Creativity) उसको क्रिया-ती-वती लिख दिया है। यह दोनों शब्द मेन्टेलिटी (Mentality) से नियंत्रित होते हैं। कठोपनिषद् के ऋषि ने बुद्धि को सारथी और मन को लगाम कहा है। रथ को चलाने के लिए सारथी के हाथ में लगाम होती है, उसी से वह घोड़ों को नियन्त्रित करता है। लगाम में दोनों रस्सियाँ बराबर रहती हैं तो घोड़े सीधे गन्तव्य की ओर चलते हैं, और इन दोनों में थोड़ा भी अन्तर होता है तो घोड़ों का मार्ग भी मुड़ जाता है और वह भटक भी सकते हैं।

आजकल किसी भी कार्य स्थल पर जाइए, वहाँ पर आपका काम कम्प्यूटर से होता है, शीघ्र भी होता है। यह सम्पूर्ण कार्य इसी कनेक्टीविटी पर निर्भर रहता है। लम्बी पंक्ति में खड़े-खड़े खिड़की पर पहुँचे, पता चला कि कनेक्टीविटी चली गयी, अब आप कुछ भी करें खड़े-खड़े पैर टूट जायें पर कनेक्टीविटी का मिलना यदि नहीं हुआ तो काम नहीं होगा। कनेक्टीविटी हो तभी क्रिया-ती-वती संभव होगी। कनक-ती-वती का कनक महत्वपूर्ण है, कहा गया है कि-

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय है वा पाये बौराय।।

यहाँ पर 'कनक' शब्द दो वस्तुओं की ओर संकेत करता है- धतूरा और स्वर्ण। धतूरे के खाने पर आदमी मदहोश होता है, किन्तु स्वर्ण के पाने पर भी वह मदहोश हो जाता है। यहाँ तीसरे 'कनक' अर्थात् गेहूँ अन्न को याद कर लेना चाहिये। 'जैसा खाये अन्न वैसा बने मन' के अनुसार अपने मन को सात्विक अन्न के सेवन से शुद्ध बनाये रखने पर बुद्धिरूपी सारथी और मनरूपी लगाम सही संचालन करते रहेंगे। अपनी क्रिया-ती-वती (क्रियेटीविटी) कार्यशीलता को बनाये रखने के लिए कनक-ती-वती (कनेक्टीविटी) की उपलब्धि आवश्यक है। यह अवरोध भुगतान प्राप्त करने में ही नहीं, भुगतान जमा करने में भी आकर विज्ञान पर अज्ञान की छाप छोड़ता रहता है। संचालकों द्वारा इसके प्रति सावधानी रखने पर ही कार्यावरोध दूर होकर (वृद्ध-युवा) ग्राहकों को राहत मिल सकती है, अन्यथा नित्यप्रति ग्राहकों का आक्रोश विस्फोटक स्थिति पर पहुँचकर कभी भी अर्थ को अनर्थ में बदल सकता है।

'वरेण्यम' अवन्तिका (प्रथम), रामघाट
अलीगढ़- २०२००१ (उ.प्र.)

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को संबल प्रदान करने हेतु श्री हजारी लाल आर्य {प्रशासनिक अधिकारी, सेवा निवृत्त} उदयपुर ने संरक्षक सदस्यता (₹ ११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

जब हम अपने गौरवशाली इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि अधिकतर महापुरुषों को महान् बनाने में उनके पूरे परिवार का सहयोग होता है, जैसे श्रीराम चन्द्र जी को महान् बनाने में उनकी धर्मपत्नी सीता, भाई भरत व लक्ष्मण, माता कौशल्या, माता कैकेयी, हनुमान जी, बाली, सुग्रीव व अंगद आदि अनेकों का सहयोग मिला था। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को महान् बनाने में बाबा नन्द, माता यशोदा, माता देवकी, पिता वासुदेव, पाँचों पाण्डव, दादा भीष्म, गान्धारी आदि अनेकों का सहयोग मिला था। परन्तु हम यहाँ उन तीन महापुरुषों की विवेचना करेंगे जिनको उनके ही किसी एक सदस्य के सहयोग ने उनको महान् ही नहीं बल्कि महानतर व महानतम् भी बना दिया। वे तीन महापुरुष हैं- शेर शिवाजी, स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे लिख रहे हैं।

१. शेर शिवाजी- शेर शिवाजी को इतना महान् बनाने का तथा अपने राष्ट्र के प्रति इतना अधिक समर्पित भाव जागृत करने का श्रेय उसकी महान् माता जीजा बाई को जाता है। जीजा बाई अपने सुपुत्र शिवा में उसके बाल्यकाल से ही लोरियों, गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना भरती रहती थीं। यही कारण था कि शिवाजी एक सच्चे राष्ट्रवादी महापुरुष बन गये। अपनी सीमित सैन्य शक्ति से औरंगजेब जैसे अन्यायी, अत्याचारी व बलवान बादशाह को भी नाकों चने चबबा दिये। उसके अनेकों प्रयत्नों के बावजूद भी शिवा जी उसकी पकड़ में नहीं आये और शिवाजी अपना छोटा सा हिन्दू राज्य स्थापित करने में सफल रहे।

२. स्वामी श्रद्धानन्द- स्वामी श्रद्धानन्द, जिनके बचपन का नाम मुन्शीराम था, का जन्म सन् १८५६ में जालन्धर जिले के गाँव तलवन में हुआ था। उनके पिता नानक चन्द पहले तो फौज में रिसालदार रहे फिर पुलिस कोतवाल बरेली के बना दिये गये। एक कोतवाल का पुत्र होने के कारण उनके पास धन का अभाव नहीं था और ऊपर से सत्ता का अहंकार। इसलिए वह एक बिगड़ैल बेटा हो गया। दुनिया के सभी अवगुण उनमें घर कर गये और उनका ईश्वर पर से विश्वास उठ गया। एक बार बरेली में आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती आ गये और पिता नानक चन्द के कहने से मुन्शीराम स्वामी जी के व्याख्यान सुनने चला गया। वहाँ उसके हृदय पर स्वामीजी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उस बिगड़ैल बालक का जीवन ही बदल गया और वह केवल आर्यसमाज का ही नही बल्कि भारत का महान् देश सुधारक और एक अग्रणीय नेता बन गया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किये जिनको हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिनमें मुख्य कार्य ये हैं-

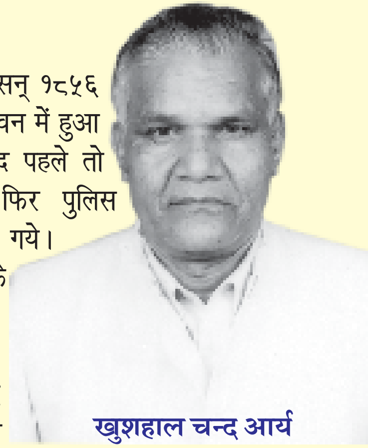
खुशहाल चन्द आर्य

२ मार्च १९०२ में हरिद्वार के समीप गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। सर्वप्रथम अपने दो पुत्रों को उसमें प्रविष्ट कराया और अपनी पूरी सम्पत्ति उस गुरुकुल में लगा दी। जिसका परिणाम यह निकला कि आज वह गुरुकुल एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में माना जाता है। १५ वर्षों तक उसका सुन्दर संचालन करके १० अप्रैल १९१७ को आप संन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। इसके बाद आप पूर्णतः राष्ट्रीय कार्यक्रमों व समाजसुधार के कार्यों में लग गये।

संन्यास धारण करने के बाद आपने ३० मार्च १९१९ को

रोलेट एक्ट के विरोध में एक प्रभावशाली और ऐतिहासिक जुलूस निकाला, जिसमें आपने गोरी सेना के सामने अपनी छाती खोलकर गोली चलाने का एलान किया। गोरी सेना ने गोली नही चलाई और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् १९१९ में जलियाँवाला भीषण काण्ड होने से पंजाब में एक भयावह स्थिति बन गई थी। ऐसी स्थिति में अमृतसर में कॉग्रेस के अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर अधिवेशन को सफल किया और अपना स्वागताध्यक्ष भाषण हिन्दी में सुनाकर कॉग्रेस के इतिहास में एक नया उदाहरण पेश किया। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। उन्होंने मुसलमानों की विशाल सभा में ४ अप्रैल १९२५ को दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद की मीनार पर बैठकर वेद-मंत्र पढ़कर विशाल सभा को सम्बोधित किया। जिसको सुनकर मुसलमान नवयुवक बहुत प्रसन्न हुए। यह दिल्ली के इतिहास में एक नई घटना थी। फिर ६ अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद से भाषण देकर स्वामी जी ने मुसलमानों का दिल जीत लिया। फिर बाद में स्वामीजी अपने आखिरी दिनों में शुद्धि का कार्य करने लगे और उन्होंने हजारों मलकाना राजपूतों तथा अन्य लोगों को शुद्ध करके हिन्दू बनाया, तब कट्टर मुसलमान नाराज हो गये और २३ दिसम्बर १९२६ को एक अब्दुल रशीद नाम के धर्मान्ध नवयुवक ने गोली मारकर स्वामी जी की हत्या कर दी। स्वामी जी की धर्मपत्नी जिनका नाम शिवदेवी था। वह बड़ी पतिव्रता नारी थीं। जब स्वामी जी अनेकों दुर्गुणों व व्यसनों में फँसे हुए थे, तब वे रात्रि को दो-तीन बजे घर पर आते थे और आकर उल्टी करते थे, तब उनकी धर्मपरायणा पत्नी अपने पति का बिना कुछ खाए इन्तजार करती थीं। आने के बाद उनकी की हुई उल्टी को साफ करके उनको भोजन देती थीं। एक दिन स्वामी जी ने उनसे पूछ ही लिया कि हे! शिवे क्या तुमने भोजन कर लिया? तब शिवदेवी ने कहा कि हे पतिदेव! आपको भोजन करवाने से पहले, मैं कैसे भोजन कर सकती हूँ। यह सुनकर स्वामी जी अवाक् रह गये। इसका असर स्वामी जी पर यह पड़ा कि उन्होंने अपनी सभी बुरी आदतें छोड़ दीं। स्वामी जी ने अपनी जीवनी में लिखा है कि मेरे जीवन को बदलने में पहला सहयोग स्वामी दयानन्द का है और दूसरा सहयोग मेरी धर्मपत्नी शिवदेवी का है। इस प्रकार शिवदेवी ने अपने बिगड़ैल पति को अपने आचरण के द्वारा सुधार उन्हें एक महान् पुरुष बना दिया।

३. कर्मयोगी महात्मा हंसराज- महात्मा हंसराज का जन्म १९ अप्रैल १८६४ को बजवाड़ा के एक छोटे से ग्राम में एक निर्धन परिवार में हुआ था। यह कौन जानता था कि यह जन्म लेने वाला बालक आगे चलकर लार्ड मैकाले द्वारा १८३५ में घोषित अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के लिए एक प्रबल विद्रोही बन विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का प्रवर्तक एवं प्रचारक सिद्ध होगा। महात्मा हंसराज को लाहौर के गवर्नमेन्ट कॉलेज में अध्ययन करते हुए लाला लाजपत राय व पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे प्रतिभावान सहपाठी मिल गये। इन तीनों के विचार एक समान थे। तीनों ही विदेशी विचारधारा को समाप्त होता हुआ देखना चाहते थे। इस समय आर्यसमाज एक जीवन्त संस्था थी। लाहौर आर्यसमाज के प्राण लाला सांईदास जी माने जाते थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और आकर्षक था कि उनके सम्पर्क में आने वाला उनका ही बन जाता था। ये तीनों युवक भी उनके सम्पर्क और संसर्ग में आकर आर्यसमाज में आने लगे। सन् १८८३ में महर्षि दयानन्द का विषपान से बलिदान हो गया। नाव का खिवैया नाव को मझधार में ही छोड़कर चला गया। चारों ओर अन्धेरा छा गया। लाहौर के आर्य पुरुषों ने महर्षि का एक ऐसा स्मारक बनाने का विचार किया जो महर्षि के कार्यों की रक्षा के साथ-साथ विस्तार करने वाला भी हो। विचारानन्तर डी.ए.वी. स्कूल खोलने का निश्चय किया गया। समस्या इतनी धन की नहीं थी जितनी अध्यापन कार्य करने की थी। युवक हंसराज बी.ए. कर चुका था। अपने आचार्य के अधूरे कार्यों को पूरा करने की इसके मन में तड़फ थी। उसने वहाँ तो अपनी भावना को प्रकट नहीं किया परन्तु अपने अग्रभ्राता मुल्खराज को अपने मन की सब बात बतलाकर उनसे आशीर्वाद चाहा। लाला मुल्खराज ने अपने छोटे भाई को त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होते देख, स्वयं को भी उसी राह का राही बना लिया। उन्होंने कहा कि जब तक तुम स्कूल की निष्काम सेवा करना चाहो, तब तक करो। मैं अपने मासिक वेतन ८० रुपयों का आधा भाग तुमको देता रहूँगा और वे अनेक तकलीफों व कष्टों को सहन करते हुए जीवन भर अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को अपना आधा वेतन देते रहे। यह था मुल्खराज का अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को महान् बनाने में सहयोग।

इस प्रकार इन तीनों दृष्टान्तों में शिवा जी की माता जीजा बाई का, स्वामी श्रद्धानन्द की धर्मपत्नी शिवदेवी का तथा महात्मा हंसराज के बड़े भाई लाला मुल्खराज का, इन तीनों को महान् बनाने में बड़ा सहयोग रहा। इन तीनों को किसी भी सच्चे भारतीय को भूलना नहीं चाहिये।

१८० महात्मा गाँधी रोड़ (दो तल्ला)
कोलकत्ता

हम तुम भांड हैं

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

समझदार तो इस शीर्षक पर नाराज हो जावेगा, उत्तेजित होकर सरोष स्वर में कहेगा- 'आपको अधिकार है कि अपने आपको भांड, गवैया-नचैया, बहुरूपिया या नौटंकीबाज कहें पर दूसरों को भांड कहने का आपको कोई अधिकार नहीं है।' यदि मैं कहूँ कि इस शब्द का प्रयोग महर्षि ने किया है तो आप अवाक् रह जावेंगे।

सत्यार्थप्रकाश के सप्तम सम्मुलास में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन कर उसकी सगुण और निर्गुण भक्ति का उल्लेख किया गया है। ऐसी भक्ति का प्रकार यह बताया है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे- अपने गुण-कर्म-स्वभाव भी तद्वत् करना जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे। और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है।' 'व्यर्थ' शब्द का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। महर्षि ने 'चरित्र' का आदर्श 'परमात्मा' को ही रखा है। इससे अधिक सबल, सार्थक, निर्दोष, निर्विवाद और कोई आदर्श हो ही नहीं सकता। जो ईश्वर स्तुति चरित्र सुधार के लिये नहीं की जाती उसका करना व्यर्थ है।

पूजा-पाठ के प्रचलित कारोबार को लगभग ४० वर्ष तक, २४ घण्टे देख-सुनकर, उसके बीच रहकर, अत्यन्त सूक्ष्मता से अवलोकन करने के पश्चात् महर्षि का यह मन्तव्य, निष्कर्ष आज भी उतना ही सटीक है जितना उनके काल में था। मेरी तो अत्यन्त अल्पबुद्धि में सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश रचना का यह आधार वाक्य है।

सत्यार्थप्रकाश में अपने मन्तव्य को स्थायित्व प्रदान कर आर्य समाजियों को भी चेतावनी दे दी। लगभग १५० वर्ष आर्यसमाज की स्थापना व सत्यार्थप्रकाश को प्रकाशित हुए हो चुके हैं। महर्षि के मन्तव्य को कितने आर्यसमाजियों ने समझा व अपनाया है, उसका सिंहावलोकन होना चाहिए अन्यथा आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के रसातल की तरफ तीव्र गति से अग्रसर हो रहे कदमों को थामा नहीं जा सकता। मेरा मानना है कि महर्षि के मन्तव्य को जिस पीढ़ी ने समझा व अंगीकार किया, वह पीढ़ी ही समाप्त हो चुकी है। ग्वालियर के जिस आर्यसमाज से मैं सम्बद्ध रहा, वह स्थापना के १२५ वर्ष पश्चात् निम्नतम स्तर पर भग्न भवन को लेकर खड़ा है। पतन क्रमागत हुआ और प्रारम्भ होने के पश्चात् उस पतन की गति में तेजी आई। इस बिन्दु पर अभी इतना ही लिखना पर्याप्त है।

प्रसंग पर आता हूँ। आज भी प्रत्येक आर्य समाजी ताल ठोक कर कहेगा कि हम वैदिकधर्मी ही ईश्वर विश्वासी हैं। ईश्वर के सम्बन्ध में हमारी सोच ही सही है और पूजा-पद्धति भी सही है। ठीक है यदि दोनों बातें सही हैं तो हमारी संख्या वृद्धि होनी चाहिए पर स्थिति यह है कि वृद्धि कम और ह्रास ज्यादा हो रहा है। इसलिये न तो व्यक्तिगत रूप में हमें लाभ हो रहा है और न ही सामाजिक रूप में हमारी वैदिक विचारधारा को स्वीकृति मिल रही है। हम १५० वर्षों में महर्षि के महत्वपूर्ण आशय को जन सामान्य अथवा प्रबुद्ध वर्ग को ही अंगीकार कराने में सफल नही हो सके। परिणामस्वरूप पनपे वैष्णोंदेवी मन्दिर, बर्फानी बाबा, सत्यसाँई बाबा (पुट्टपार्थी), साई बाबा (शिरडी) गायत्री मन्दिर, आसाराम बाबा, रामपाल बाबा, बाबा राम रहीम, निर्मलबाबा आदि। आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित चारों धाम तो थे ही, उनमें दरगाहें, विशेषकर अजमेर शरीफ भी

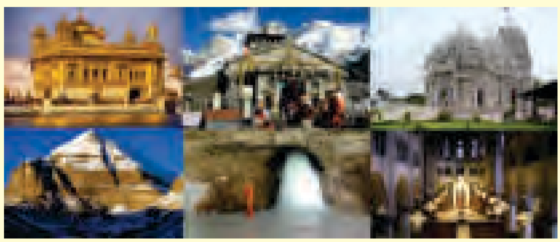

जुड़ गई है। हिन्दू माताओं की इनमें अपार श्रद्धा है, आस्था है। अपार श्रद्धा और अटूट आस्था को तोड़ने में मेरा विश्वास नही है; हिम्मत भी नहीं है। हम वैदिक धर्मी अपने चरित्र और आचरण से तथा वैदिक विद्वान् प्रवचन और लेखन से बहुत कुछ कर सकते हैं।

यह विषयान्तरण नहीं हुआ है बल्कि मुख्य विषय पर आने से पूर्व अपना मूल्यांकन कर आगे बढ़ना उचित प्रतीत हुआ।

१५ नवम्बर २०१४ को प्लेसनटन, यूएसए आने से पूर्व

विचारतंत्री, जीवात्मा, पुनर्जन्म व कर्मफल सिद्धान्त आदि में उलझी हुई थी। दो लेखों में अपना दृष्टिकोण अभिव्यक्त करने के पश्चात् भी विश्राम नहीं मिल रहा था। यहाँ आने पर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'जीवात्मा' का अध्ययन किया। इसी क्रम में सत्यार्थप्रकाश के सप्तम और अष्टम समुल्लास का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। दूसरे पारायण में गाड़ी समुल्लासों के क्रम पर अटक गई। यदि महर्षि का उद्देश्य केवल वैदिक धर्म की ही स्थापना होता तो प्रथम समुल्लास के बाद ही सप्तम और अष्टम समुल्लासों के विषयों को स्थान मिलना चाहिये था। शिक्षा, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, संन्यास आदि विषयों में छः समुल्लास लिखने की बात तो बाद में भी रखी जा सकती थी। दो-तीन दिन बुद्धि को इसी बिन्दु पर अटके रहने दिया। सत्यार्थप्रकाश की रचना का महर्षि का आशय समझ में आया, आत्मसात हुआ कि उनका उद्देश्य किसी प्राचीन, अर्वाचीन या नए मत को प्रस्थापित करने का नहीं था, उन्हें तो प्राचीनतम, सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना और व्यक्ति निर्माण राष्ट्रनिर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करना था। उसका ही धरातल तैयार करने में छः अध्याय लिखने पड़े। व्यक्ति का सही निर्माण हो गया तो उसे ईश्वर और उसकी सृष्टि को समझने की योग्यता भी प्राप्त हो जावेगी।

इस लेख में तो मैं विषय के अनुरूप ही आगे बढ़ने का प्रयास करूँगा। देखिए, महर्षि सप्तम समुल्लास में क्या लिखते हैं- 'जो सब दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव-विद्यायुक्त और जिस में पृथिवी सूर्यादि लोक स्थित हैं और जो आकाश के समान व्यापक सब देवों का देव परमेश्वर है, उस को जो मनुष्य न जानते, न मानते और उस का ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक, मन्दमति सदा दुःखसागर में डूबे ही रहते हैं।' ईश्वर की परिभाषा और उसको न समझने का फल क्या इससे भी कम शब्दों में, पूर्ण स्पष्टता के साथ समझाया जा सकता है?

आर्यसमाज के लिये निर्धारित दस नियमों के दूसरे नियम में महर्षि ने ईश्वर को २१ गुण-कर्मों में व्याख्यात किया है। पूर्वोक्त वर्णन में १. दिव्य-गुण-कर्म-स्वभाव २. विद्यायुक्त ३. हिरण्यगर्भ व ४. सर्वव्यापकत्व बताए हैं। नियमावली में पहिले दो बिन्दु पृथक् रूप से रेखांकित नही हैं। दूसरे नियम का समापन इस वाक्यावली से किया है कि 'और (वह) सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।' इस प्रसंग का समापन सप्तम समुल्लास में महर्षि उसे 'नास्तिक' कहकर करते हैं और वह 'दुःखी' रहता है।

सामान्य जन ईश्वर में विश्वास न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। विद्वान् वेद में आस्था न रखने वाले को नास्तिक कहते हैं। आप पूछेंगे कि दोनों में अन्तर क्या है? दोनों में अन्तर यही है कि वेदज्ञ विद्वान् वेद में चिह्नित किए गए 'ईश्वर' को, जिसकी व्याख्या में अनेक मंत्र उपलब्ध हैं, उसे ही ईश्वर मानते हैं। और सामान्य जन के लिए तो प्रत्येक वस्तु ईश्वर का स्वरूप ले लेती है जो उसके सरल, सपाट दिलो-दिमाग में यह विश्वास दिलाकर उतार दी जावे कि वह 'वस्तु' या व्यक्ति उसके सब दुःखों, कष्टों और पापों का निवारण कर देने का सामर्थ्य रखता है। चाहे वह केदारनाथ, बद्रीनाथ, काशी, देवघर व उज्जैन के मन्दिरों में स्थापित शिवलिंग ही क्यों न हो? ईश्वर का यह स्वरूप पढ़ने लिखने व बोलने में कितना कुत्सित लगता है? यही नहीं समस्त चौबीस अवतार जिनमें साँप, सूअर शामिल हैं, 'ईश्वर' हैं।

महर्षि दयानन्द ने अनेक वेद मंत्रों, उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों के निचोड़ के रूप में सीधे सरल शब्दों में ईश्वर को परिभाषित कर दिया है। इस परिभाषा के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं हो सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण, महात्मा बुद्ध, बाईबिल तथा कुरान में वर्णित कोई भी व्यक्ति ईश्वर नहीं। अन्य ईश्वरों को मानने वालों की भर्त्सना 'नास्तिक' कहकर की है। जब ईश्वर को मानने वालों का ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान ही अधपका, अधूरा और भटकाने वाला है तो उनकी पूजा-उपासना करने वाले सुखी हो ही नहीं सकते। दुःखी ही रहेंगे।

महर्षि यहीं नहीं रुके। परिभाषा के क्रम को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि सगुण और निर्गुण भक्ति क्या है? और उसका प्रकार क्या है? महर्षि लिखते हैं, जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे अपने भी गुण स्वभाव करना। जो केवल 'भांड' के समान गुण कीर्तन करता जाता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता उसका ईश्वर की स्तुति करना व्यर्थ है। जो, और, व्यर्थ शब्दों का संयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जरा उनके प्रभाव को अनुभव तो कीजिए।

राजाओं और नवाबों के दरबारों में योग्य मंत्री चाहे हों न हों, परन्तु भांड अवश्य रहते थे। राजाओं का मन बहलाना, मनोरंजन करना उनका काम होता था। सीमाहीन चाटुकारिता उसका अपरिहार्य अंग होता था। एक बार एक राजा के भोजन में बैंगन की सब्जी परोसी गई। राजा को सब्जी बहुत स्वादिष्ट लगी और उसने सब्जी की बहुत प्रशंसा की। भांड महोदय ने तत्काल कहा, महाराज, एक यही सब्जी है जिसके सिर पर छत्र है। राजा ने कहा- वाह-वाह, क्या खूब कहा। कुछ समय पश्चात् बैंगन की सब्जी फिर राजा के भोजन में आ गई। इस बार उसने राजा के पेट में विकार पैदा कर दिया। राजा ने बहुत नाराज होकर कहा- यह सब्जी बहुत खराब है। भांड

महोदय ने छक्का लगाया। महाराज, इसीलिए इस सब्जी को बैंगुन (बिना गुण वाला) कहते हैं।

महर्षि ईश्वर की स्तुति 'चरित्र' निर्माण के लिये निर्धारित करते हैं। जिस व्यक्ति ने अपनी समस्त शक्ति, ध्यान यहाँ तक कि ईश्वरोपासना ही चरित्र निर्माण के लिए लगा दी तो वह बुराइयों की ओर आकर्षित ही नहीं होगा। उसके कल्याण का मार्ग स्वयं प्रशस्त होता जावेगा। अन्य सभी मत (धर्म) वाले ईश्वर स्तुति का फल या लाभ यह बताते हैं कि ईश्वर स्तुति से मनोकामना की पूर्ति, पापों से, बिना फल भोगे, छुटकारा और स्वर्ग की प्राप्ति। दोनों के मन्तव्यों में जमीन-आसमान का अन्तर है। महर्षि का मार्ग कठिन है, बहुत कठिन है। अन्य मतवालों का बहुत सरल। अन्य मतवाले कहते हैं कि केवल ईश्वर का नाम जपने से ही उपरोक्त तीनों फल मिल जाते हैं। बस आदमी को चाहिए ही क्या?

आज भी हजारों साधु-संन्यासी मिल जावेंगे जो 'नाम-जप' का महत्व प्रतिपादित कर विश्वास दिला देंगे कि इतने ही कार्य से ईश्वर-पूजन की प्रक्रिया समाप्त। नाम का जाप सीधा करो या उल्टा, स्वर्ग (कौनसा स्वर्ग?) का द्वार खुला मिलेगा। राम नाम की जगह मरा-मरा भी बोलोगे तब भी। क्योंकि परमात्मा अन्तर्यामी है, भक्त की भावना को समझता है। इसीलिए ये लोग 'भावना' के महत्व की बात करते हैं।

सोमनाथ मन्दिर के परिसर में हम पति-पत्नी घूम रहे थे। कुछेक पुजारियों (पूजा के अरियों (दुश्मनों) महर्षि ऐसी पूजा कराने वालों को यही कहते थे) ने कहा कि वह हमारे लिये किसी भी देवता (ईश्वर) का पाठ कर देंगे। बस आपको अमुक-अमुक देवता की अमुक-अमुक राशि दक्षिणा में देनी होगी। हमने स्वयं भी देखा ऐसी पूजा चल भी रही थी। पूछा पूजा का लाभ किसे मिलेगा। उत्तर मिला 'भक्त' को यानि हमें! पूजा करेंगे पुजारी जी और लाभ 'भक्त' को। हे भगवन् कैसा 'माया-जाल' है। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने का निर्देश देते हुए महर्षि ने सांकेतिक रूप से एक गुण का उल्लेख किया है कि वह न्यायकर्ता है। यह क्षेत्र ऐसा है जिसे बिना कुछ त्याग-तपस्या किए प्रत्येक मनुष्य अपना सकता है। यह गुण सामाजिक गुणों का विकास करने का बहुत बड़ा आधार बन सकता है। ईश्वर जाति-भेद, रंग-भेद, ऊँच-नीच, सम्पन्नता-विपन्नता, किसी भी कारण से न्याय करने में भेद-भाव नहीं करता। सृष्टि की रचना कर, उसका निर्मूल्य अपनी बुद्धि और सामर्थ्यानुकूल उपभोग करने की व्यवस्था परमात्मा ने कर रखी है। हम पूरी तरह से सृष्टि रचना का सत्यानाश करने पर तुले हुए हैं। आज हम पानी बेच रहे हैं। कल हवा बेचेंगे। पर्यावरण प्रदूषण इतना बढ़ गया है और दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है कि एक दिन ऑक्सीजन का सिलेण्डर लेकर निकलना पड़ेगा। लाशों, कैमिकल्स और मानव द्वारा विसृत गंदगी से नदियाँ भरी पड़ीं हैं। इन नदियों के जल का आचमन, स्नान-ध्यान वेद में वर्णित मोक्ष तो नहीं देगा, उदर और त्वचा सम्बन्धी रोग अवश्य देगा।

ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के संसाधनों का बुद्धिपूर्वक उपयोग भी, ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अपनाने वाले महर्षि के मंतव्य की पूर्ति करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ईश्वर भ्रष्टाचार नहीं करता, पाप नहीं करता, खाद्यान्न व औषधियों में मिलावट नहीं करता, ईश्वर कन्या-भ्रूण हत्या नहीं करता। क्या आप इन दुर्गुणों से दूर, बहुत दूर जाकर ईश्वर के निकट, अति निकट आने का प्रयास भी नहीं करना चाहेंगे? या इन दुष्कर्मों में लिप्त रह कर 'भांड' के समान स्तुति और प्रार्थना ही करते रहेंगे?

सेवानिवृत वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
२२, नगर निगम क्वाटर्स, जीवाजी गंज लश्कर
ग्वालियर (म.प्र.)

आर्य समाज समोरबाग, उदयपुर के प्रधान श्री सुरेश चौहान जी की माता श्रीमती देऊबाई जी का निधन दिनांक १५ अगस्त २०१५ को हो गया। सत्यार्थ सौरभ एवं न्यास परिवार परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवारीजनों को धैर्य प्रदान करें। - भवानीदास आर्य, मंत्री (न्यास)

स्मृतिशेष कै. देवरत्न आर्य की चतुर्थ पुण्य तिथि

स्मृतिशेष कै. देवरत्न आर्य की चतुर्थ पुण्य तिथि के अवसर पर परिवारीजनों ने अस्पृश्यता-निवारण-संकल्प लिया। इस अवसर पर वाल्मीकि समाज के सफाई कर्मचारियों के साथ यज्ञ तथा सहभोज का

निमन्त्रण-पत्र

।।ओ३म्।।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर

के तत्त्वावधान में

१८ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

दिनांक ३१ अक्टूबर एवं १-२ नवम्बर २०१५

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन श्रवण करने का अनुपम लाभ

कृपया ध्यान दें-

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।

२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।

३. अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें। ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।

४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। **यह व्यवस्था सशुल्क होगी।सम्पर्क: +919829063110**

५. श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें। चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास,

मान्यवर! आपको विदित ही है कि आर्यजनों द्वारा नवलखा महल, उदयपुर, जहाँ महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास विराजकर, लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थरत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था, जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था, जहाँ से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर में प्रचार-प्रसार किया जावे। प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, **यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।** प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, **(गत वर्ष २५००० सहस्र से अधिक)** यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहें हैं।

इसी क्रम में इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया था ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन, एक ऐसे स्थल पर, जहाँ कभी ऋषिवर के चरण पड़े थे; उनकी वाणी ने लागों के दिलों के तारों को झंकृत किया था, एकत्रित हो, करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा विद्वानों के चरणों में बैठ, ऋषि मिशन के अग्र-प्रसारण का संकल्प ले सकें।

आयें, हम जीवन-व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें, ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले, सम्पूर्ण मानवता के हितैषी, उस विषयायी देवता की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

१८वें सत्यार्थप्रकाश महोत्सव पर सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न्यासी	अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	भवानीदास आर्य मंत्री	विजय शर्मा उपाध्यक्ष
नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल न्यासी	श्रीमती शारदा गुप्ता महिला संयोजिका

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२६४) २४१७६६४, ०९३१४२३५१०१, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org,
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

विनती है करबद्ध यह आवें, सब श्रीमन्त।
सत्यार्थ-सूर्य प्रखर हो, तम का होवे अन्त।।

12315	ANANYA EXP.	SDAH	UDZ	THU	03:00
12316	ANANYA EXP.	UDZ	SDAH	MON	00:30
19601	UDZ NJP EXP.	UDZ	NJP	SAT	00:25
19602	NJP UDZ EXP.	NJP	UDZ	MON	08:15
19665	KHAJURAHO EXP.	KHJ	UDZ	DAILY	06:10
19666	KHAJURAHO EXP.	UDZ	KHJ	DAILY	22:20
12963	MEWAR EXP.	NZM	UDZ	DAILY	07:20
12964	MEWAR KXP.	UDZ	NZM	DAILY	18:15
12992	INTERCITY	JP	UDZ	DAILY	21:30
12991	INTERCITY	UDZ	JP	DAILY	06:15
12981	CHETAK EXP.	DEE	UDZ	DAILY	07:50
12982	CHETAK EXP.	UDZ	DEE	DAILY	17:20
59605	LOCAL	COR	UDZ	DAILY	08:35
59606	LOCAL	UDZ	COR	DAILY	19:30
12995	BANDRA EXP.	BDTS	UDZ	1,4,6	08:55
12996	BANDRA EXP.	UDZ	BDTS	2,4,6	21:35
19659	SHALIMAR EXP.	SHM	UDZ	SUN	08:55
19660	SHALIMAR EXP.	UDZ	SHM	FRI	20:00
59603	LOCAL	AII	UDZ	DAILY	16:55
59604	LOCAL	UDZ	AII	DAILY	09:40
59835	LOCAL	NMH	UDZ	DAILY	11:40
59836	LOCAL	UDZ	NMH	DAILY	15:05
22901	RAJA RANI EXP.	BDTS	UDZ	3,5,7	16:30
22902	RAJA RANI EXP.	UDZ	BDTS	3,5,7	21:35
19329	INDORE EXP.	IND	UDZ	DAILY	19:00
19330	INDORE EXP.	UDZ	IND	DAILY	20:35
09721	SPECIAL EXP.	JP	UDZ	DAILY	13:45
09722	SPECIAL EXP.	UDZ	JP	DAILY	14:15
52927	LOCAL	UDZ	ADI	DAILY	08:10
52928	LOCAL	ADI	UDZ	DAILY	19:00
19943	EXP.	UDZ	ADI	DAILY	17:45
19944	EXP.	ADI	UDZ	DAILY	09:20

शीघ्र आगमन सम्भव है।
यदि उड़कर आवें आप।।

UDAIPUR TO NEW DELHI

9W2634	07:45-09:30
SG2634	12:55-14:30
AI-472	16:40-18:00
SG2636	17:45-19:05
9W2630	20:45-22:25

NEW DELHI TO UDAIPUR

SG2633	11:20 -12:35
AI-471	14:00-15:10
SG2635	16:00-17:25
9W2627	05:30-07:15
9W2629	18:35-20:15

UDAIPUR TO JAIPUR

SG2624	09:50-10:50

JAIPUR TO UDAIPUR

SG2623	08:30-9:30

UDAIPUR TO BOMBAY

9W2094	07:05-08:25
AI-471	15:45-17:10
9W2074	18:20-19:45

BOMBAY TO UDAIPUR

9W2093	05:15-06:30
AI-472	14:40-16:00
9W2073	16:20-17:40

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पुरस्कार

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आर्य रत्न पुरस्कार (एक लाख के चार); आर्य विभूषण पुरस्कार (५१०००रु. के तीन); आर्य गौरव पुरस्कार (२१०००रु. के तीन) हेतु विद्वानों से प्रार्थना पत्र आमन्त्रित हैं। अन्तिम तिथि ३० सितम्बर २०१५ है।

- राव हरिश्चन्द्र आर्य, मैनेजिंग ट्रस्टी

बाय गाँव बना प्रथम सम्पूर्ण सुकन्या समृद्धि योजना गाँव

राजस्थान में झुन्झुनू का बाय गाँव प्रथम सम्पूर्ण सुकन्या समृद्धि योजना गाँव बना। इस अवसर पर आयोज्य समारोह के मुख्य अतिथि थे- डाक निदेशक श्री कृष्ण कुमार यादव।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १८** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री मनीष मारु, बीकानेर (राज.), श्री संदीप पालीवाल, बीकानेर (राज.), सुनीता खत्री, बीकानेर (राज.), कनिका भाटी, बीकानेर (राज.), श्रीमती मंजुलता शर्मा, बीकानेर (राज.), श्री राजेश कुमार निषाद, पटना (बिहार), श्रीमती आशा सहगल, गुड़गाँव (हरियाणा), श्री पवन देवड़ा, श्रीगंगानगर (राज.), श्रीमती आशा भूषण, मुज्जफरपुर (बिहार), अन्नु आर्या, सोनीपत (हरियाणा)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में महात्मा चैतन्यमुनि के निर्देशन में २७ सितम्बर से ४ अक्टूबर २०१५ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

सम्पर्क- ०६४१६१०७७८८

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् व अध्यात्म पथ के सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के नेतृत्व में आर्य ट्रेवल के सौजन्य से १-१०-१५ से ७-१०-१५ तक मारीशस यात्रा व मधुमेह रोग निवारण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शुल्क- प्रति व्यक्ति ६६०००/- रुपये।

सम्पर्क- ०९८१००८४८०६

निर्वाचन

नगर आर्य समाज, गुलाब सागर, जोधपुर के निर्वाचन सम्पन्न हुए। प्रधान- श्री रामेश्वर जसमतिया, मन्त्री- श्री बुद्धि प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष- श्री यशपाल आर्य

आर्य समाज, रामनगर, रुड़की के निर्वाचन सम्पन्न हुए। प्रधाना- श्रीमती ऊषा रानी आर्या, महामन्त्री- आर्य रामेश्वर प्रसाद सैनी, कोषाध्यक्ष- श्री जे. डी. त्यागी

सभी निर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ की ओर से शुभकामनाएँ।

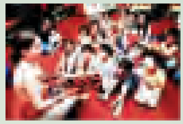

उचित दण्ड

एक बार की बात है एक देश का राजा अपने दो महामंत्रियों व राजकर्मचारियों के साथ राजधानी का दौरा कर रहा था। तभी अचानक सनसनाता हुआ एक पत्थर आया और राजा को जोर से लगा। उनके सर से रक्त की धारा बह निकली। ग़नीमत थी कि राजा की आँखें और नाक बाल-बाल बच गए। ये देखकर साथ चल रहे राजकर्मचारी उस दिशा की ओर दौड़े जिस दिशा से पत्थर आया था। थोड़ी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि वहाँ पर पके हुए आमों से लदा हुआ एक पेड़ था और एक आदमी पेड़ से फल तोड़ने के लिए पत्थर फेंक रहा था। उसने इसी तरह से कई आम इकट्ठे कर लिए थे। जब उसे पता चला कि उसके द्वारा फेंके गए पत्थरों में से एक पत्थर राजा को जाकर लगा है तो वह बहुत घबरा गया। उसने राजकर्मचारियों से क्षमा माँगते हुए कहा कि ऐसा उसने जान-बूझकर नहीं किया। ख़ैर राजकर्मचारी उसे पकड़ कर राजा के पास ले आए। राजा ने उस व्यक्ति को तो कुछ नहीं कहा लेकिन अपने दोनों महामंत्रियों पर एक प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों ही महामंत्री समझ गए कि राजा कोई फैसला करने से पहले इस मामले में हमारी राय जानना चाहते हैं। एक मंत्री ने तत्परता दिखलाते हुए कहा, ''महाराज! इस उद्दण्ड व्यक्ति के कारण आपको गंभीर चोट आई है। इसकी धृष्टता के कारण आपकी आँख जा सकती थी। नाक टूट सकती थी। इसके कुकृत्य के लिए इसे कठोरतम सज़ा अर्थात् मृत्युदण्ड दीजिए जिससे बाक़ी लोगों को भी सबक़ मिले और उनमें ख़ौफ़ पैदा हो जिससे राज्य में अनुशासन क़ायम रह सके।''

सीताराम गुप्ता

इसके बाद राजा ने दूसरे महामंत्री की ओर देखा जो अब तक अत्यंत शांत व संयत भाव से खड़ा था। उसने हाथ जोड़ कर अत्यंत नम्रतापूर्वक कहा, ''महाराज इसमें संदेह नहीं कि इस व्यक्ति से ग़लती हुई है लेकिन हममें से कौन ऐसा व्यक्ति है जिससे कभी भी कोई ग़लती न हुई हो? फिर इसने जानबूझ कर भी तो ऐसा नहीं किया है। यह सच है कि इस व्यक्ति के कारण आपके सर पर चोट लगी है लेकिन ईश्वर की कृपा से आपकी दोनों आँखें व नाक पूरी तरह से सुरक्षित हैं। यदि दुर्भाग्य से आपकी आँखें चली जातीं अथवा नाक टूट जाती तो भी इस व्यक्ति को मृत्युदण्ड देने पर भी वापस नहीं आतीं। इस व्यक्ति ने पत्थर मार-मार कर कई आम तोड़े हैं। आम का फलदार पेड़ पत्थर मारने पर भी पत्थर मारने वाले को फल देने में परहेज़ नहीं करता।''

महामंत्री ने आगे कहा, ''महाराज! आप समर्थ व सक्षम ही नहीं प्रजावत्सल व प्रजापालक भी हैं। आप अपने विवेक से उचित निर्णय लीजिए जिससे राज्य में अनुशासन व अमन-चैन क़ायम रहे और साथ ही प्रजा का आपके प्रति जो प्रेम व विश्वास है उसमें भी कमी न आने पाए। लोग ये न समझने लगें कि हमारे महाराज बहुत क्रूर, अहंकारी, असहिष्णु व निरंकुश शासक हैं जो विरोधियों व विपक्षी पार्टी के लोगों तथा आम नागरिकों के साथ बदले की भावना से पेश आते हैं।''

राजा गर्व व प्रसन्नता के साथ इस महामंत्री की ओर गए और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। फिर पहले वाले महामंत्री की ओर देखा। उसे अहसास हो गया था कि उसने उचित सलाह नहीं दी है अतः वह सिर झुकाए खड़ा रहा।

राज्य की वास्तविक भलाई व सुरक्षा इसी में है कि किसी भी नागरिक को किसी छोटी-मोटी गलती के लिए भयंकर दण्ड न दिया जाए लेकिन जो लोग भ्रष्टाचार में आकंठ लिप्त हैं, जिन्होंने संवैधानिक पदों पर रहते हुए गलत तरीक़े से अकूत संपत्ति का संचय किया है, चाहे वो विरोधी या विपक्षी पार्टी के लोग हैं अथवा अपनी पार्टी के, उन सबको व अन्य दुर्दान्त अपराधियों को कठोरतम दण्ड दिया जाए।

डी. १०६-सी, पीतम पुरा, दिल्ली - ११००३४
फोन नं- ०९५५५६२२३२३

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा

''नाम के साधु''

का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

अकर्मण्य साधुवेशधारियों के प्रति महर्षि दयानन्द का विचार था- 'जो संन्यासी विद्याहीन, दण्ड-कमण्डलु ले भिक्षामात्र करते फिरते हैं, जो कुछ भी वेदमार्ग की उन्नति नहीं करते, छोटी अवस्था में संन्यास लेकर घूमा करते हैं और विद्याभ्यास को छोड़ देते हैं, वे संन्यासी इधर-उधर, जल-स्थल, पाषाण आदि मूर्तियों का दर्शन-पूजन करते फिरते या विद्या जानकर भी मौन रहते, एकान्त देश में यथेष्ट खा-पीकर सोते पड़े रहते हैं और ईर्ष्या-द्वेष में फँसकर निन्दा-कुचेष्टा करके निर्वाह करते, काषाय वस्त्र और दण्ड-ग्रहणमात्र से अपने को कृतकृत्य समझते और सर्वोत्कृष्ट जानकर उत्तम कर्म नहीं करते, वैसे संन्यासी भी जगत् में व्यर्थ वास करते हैं और जो सब जगत् का हित साधते हैं, वे ठीक हैं।' (श्रीमद्दयानंदप्रकाश, पृष्ठ २१३)

सन् १८७८ में प्रयाग में कुम्भ मेले में निष्क्रिय साधुओं को देखकर स्वामी जी ने कहा था- 'परोपकार के बिना नर-जीवन मृगजीवन से उच्च नहीं है। सैकड़ों साम्प्रदायिक साधु लोग इस मेले आये हुए हैं। ये गृहस्थों का नित्य आठ आने का पदार्थ खाकर जंगल में पड़े रहते हैं। सोचिए तो सही, इनमें और मृगों

में भेद ही क्या? मृग भी तो इसी प्रकार किसानों के खेत नोंचकर वनों में घुस जाया करते हैं। इस जीवन का लाभ ही क्या है? यह पशु-पक्षियों को सहज ही उपलब्ध है।'

उसी वर्ष अमृतसर में उन्होंने निर्मले साधुओं से कहा था- 'सहस्रों भारतवासी पेट-भर अन्न नहीं पाते, दाने-दाने के लिए तरसते हैं। भूख के मारे कुत्ते-बिल्ली की मौत मरते रहते है। देश की ऐसी शोचनीय दशा में लोहेशाही और तूंबेशाही की क्या आवश्यकता है? इस समय तो प्रत्येक को परिश्रम करके आजीविका चलानी चाहिए।'

- (श्रीमद्दयानंदप्रकाश, पृष्ठ ३५६)

संन्यासी के लिए परोपकार कर्म को महर्षि कितना महत्व देते थे, यह उनके जीवन की एक घटना से पता चलता है। सन् १८६८ में सोरों में एक दिन गंगाघाट पर एक साधु, कमण्डलु आदि प्रक्षालन करके वस्त्र धोने में प्रवृत्त था। वह था एक घुटा हुआ मायावादी। उससे वार्त्तालाप के दौरान उसकी मिथ्या धारणाओं का निराकरण करते हुए महर्षि ने उसे अत्यन्त भाव प्रवण शब्दों में उपदेश करते हुए कहा- 'क्या आपने कभी उन बन्धुओं की भी चिन्ता की है जो लाखों की संख्या में भूख की चिता पर पड़े हुए रात-दिन, बारहों महीने, भीतर-ही-भीतर जलकर राख हो रहे हैं? उनके तन पर गले-सड़े, मैले कुचैले चिथड़े लिपट रहे हैं। लाखों दीन-हीन ग्रामीण भेड़ों और भैंसों की भान्ति गन्दे कीचड़ और कूडों के ढेरों से घिरे हुए गले-सड़े झोंपड़ों में दिन काट रहे हैं। महात्मन्! यदि आत्मा से और विराट आत्मा से प्रेम करते हैं तो अपने अंगों की भाँति उन्हें भी अपनाना होगा। अपनी भूख-प्यास की तरह उनकी भूख प्यास की भी चिन्ता करनी होगी। भगवान का सच्चा प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता। यह सुनकर वह साधु स्वामीजी के चरणों पर गिर पड़ा।' इस प्रकार महर्षि के मत में संन्यासी का जीवन मानवता की सेवा के लिए होता है। वह घर परिवार की, देश परदेश की सीमाओं को लाँघकर जन-जन की सेवा में प्रवृत होता है। ऐसा व्यक्ति खाली कैसे बैठ सकता है? (सत्यार्थ भास्कर)

महर्षि ने अपना सारा जीवन सत्य तथा परोपकार के हित बिताया। यहाँ तक कि इसी कारण जीवन भी बलिदान कर दिया। वे चाहते थे कि प्रत्येक संन्यासी ऐसा हो जाय तो देश का कायाकल्प हो जाय परन्तु उनके समय में भी और आज भी अनेक मिथ्या मान्यताएँ संन्यास के संदर्भ में प्रचलित रही हैं। अधिकांश में लोग बिना किसी योग्यता के सिर्फ भिक्षा से भोजन और निरर्थक इधर-उधर घूम कर मौज मस्ती के लिए साधु वेश में फिर रहे थे, और फिर रहे हैं।

ऐसे अनाधिकारी संन्यासियों के विषय में स्वामी दयानन्द का कहना है जो अनाधिकारी संन्यास ग्रहण करेगा तो आप डूबेगा औरों को भी डुबायेगा। क्योंकि ऐसे ही अनाधिकारी संन्यासी संन्यास के नियमों के विरुद्ध आचरण करने में भी नहीं सकुचाते। इस विषय में अत्रि सूत्र ८/१८ में कहा गया है- मैं उस व्यक्ति के लिए किसी प्रायश्चित की कल्पना तक नहीं कर सकता जो संन्यासी हो जाने के उपरान्त भ्रष्ट या च्युत् हो जाता है। वह न तो द्विज है और न शूद्र है, उसकी सन्तति चाण्डाल हो जाती है। दक्ष सूत्र ७/३३ में लिखा है कि राजा को चाहिए कि वह उस व्यक्ति (पतित संन्यासी) के मस्तक पर कुत्ते के पैर की मुहर लगाकर देश निकाला कर दे।

वर्त्तमान हिन्दु समाज में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की स्थिति अत्यन्त पतनावस्था की ओर अग्रसर हो रही है। आर्य समाज के संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने 'भारत की अवनति के सात कारण' शीर्षक पुस्तक में सातवाँ और अन्तिम कारण साठ

लाख साधुओं की निकम्मी फौज को भी माना है। जिस पर वार्षिक व्यय प्रतिवर्ष ४०० करोड़ रु. आ जाता है। केवल आद्य जगत् गुरु स्वामी शंकराचार्य के अद्वैत शिष्यों के संन्यासियों की ही १० शाखाएँ यथा तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी हैं जो आपस में सम्पत्तियों के लिए

लड़ते-झगड़ते रहते हैं। (धर्म शास्त्र का इतिहास-प्रथम भाग) इनका यह लड़ना-झगड़ना कभी रुका नहीं, आगे ही बढ़ता गया। आज जिस प्रकार से संन्यासियों के मठों, मन्दिरों और आश्रमों के सम्पत्तियों के झगड़े, कुम्भ/अर्ध कुम्भ मेलों में आगे पीछे शाही स्नान को लेकर जो सिर फुटव्वल, चिमटा, तलवार और त्रिशूल बाजी होती है, गोलियाँ चलती हैं, इन सब को देखकर सिर शर्म से झुक जाता है। जिन संन्यासियों का राजनीति में दखल है, उनमें से कईयों के कारनामें ही राष्ट्र विरोधियों के हैं। संन्यासियों में प्रायः तस्कर, बलात्कारी, व्याभिचारी, ठग, डाकू, चोर, हत्यारे आदि सब कुछ होते हैं।

श्री पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री "सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास का सार" पुस्तिका में वर्त्तमान संन्यासियों का एक नक्शा खींचते हुए लिखते हैं- "मैंने अपनी आजीविका के लिए चित्रकारी का कार्य आरम्भ किया और मेरे जीवन के लगभग २७ वर्ष मन्दिरों में बीते। उस अवधि में मैंने अनेक स्थानों पर साधुवेशधारियों द्वारा महिलाओं के साथ की गयी कुचेष्टाओं को अपनी आँखों से देखा। मध्यप्रदेश के धार जिले में एक राजगढ़ नामक कस्बा है। वहाँ एक साधुवेशधारी को एक महिला के साथ मैंने जिस अवस्था में देखा, उसका उल्लेख करने में मैं असमर्थ हूँ।" स्पष्ट है कि आज सच्चे परोपकारी मोक्षगामी संन्यासियों का नितान्त अभाव है।

सम्पादक- अशोक आर्य

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२०

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ल	१		२	न		३		सौ ३	
	४		म ४		५		याँ ५		६	द्धि ६
७		७ ना		स्था ७		८	न	८	वृ	८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. होम में न्यून से न्यून कितनी आहुतियाँ देवें?
२. महर्षि दयानन्द के अनुसार ब्रह्मचर्य कितने प्रकार का होता है?
३. उत्तम ब्रह्मचर्य के सेवन से मनुष्य अपनी आयु को कितने वर्ष तक बढ़ा सकता है?
४. जो ४८ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहे वह ब्रह्मचर्य क्या कहलाता है?
५. किसे वश में रखना कठिन काम बताया गया है?
६. १६वें वर्ष से लेके २५वें वर्ष पर्यन्त जब सब धातुओं की बढ़ती होती है वह अवस्था क्या कहलाती है?
७. २५वें वर्ष के अन्त और २६वें वर्ष के आदि में किस अवस्था का आरम्भ होता है?
८. पढ़ते-पढ़ाते समय किसे सब दोषों से हटाकर पढ़ते-पढ़ाते हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १८ का सही उत्तर

१. चतुर्थांश　२. प्राणायाम
३. ज्ञान　४. चौबीस वर्ष
५. द्विज　६. विष　७. यज्ञोपवीत

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०१५

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख